ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

दिसंबर, 2021

मैरी क्रिसमस

- सांताक्लॉज का प्रण
- दुनिया रहती दंग
- हर त्योहार बहुत भाता है
- क्या वे होते हैं?

सहयोग राशि
₹ 20/ मात्र

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका
पायस
दिसंबर 2021
वर्ष : 1, अंक : 12

इस अंक की रचनाएं

स्पेशल स्टोरीज

हम नहीं किसी से कम		8
इंटरनेशनल बैंक डे		12
मानवाधिकार दिवस		16
आदिवासी नृत्य महोत्सव	सुमन बाजपेयी	28
पर्वत की भी सुनो		34
अंतरराष्ट्रीय प्रवासी दिवस		38

क्रिसमस पर खास

दिविक रमेश :	हर त्योहार बहुत भाता है	5
अनिल जायसवाल :	सांताक्लॉज का प्रण	6
सुमन बाजपेयी :	सांता का गिफ्ट	10
शिखर चंद जैन :	दुनिया दीवानी है इन पारंपरिक केकों की	22
दिशा ग्रोवर :	अंकल सांता आए	39
सांता की सवारी :	रेंडियर	56
चित्रकथा :	सांताक्लॉज	63

अन्य

खेल	: पैरों का जादूगर	62
सैर-सपाटा	: कोलकाता	50

बाल मंच

चित्र : निशा साहू, माधुरी, द्युति, माधुरी साहू, आंचल, हुमैरा मिर्ज़ा, अराध्य वैश्य, वेदांश वैश्य 58-60

कविता : प्रकाश चंद : सर्दी से मुलाकात 61

कहानियां

अनिल जायसवाल :	सांताक्लाज का प्रण	6
सुमन बाजपेयी :	सांता का गिफ्ट	10
समीर गांगुली :	क्या वे होते हैं?	14
संजीव जायसवाल 'संजय' :	जुकामी चाचा	18
गोविन्द भारद्वाज :	सफेद चूहा	24
डॉ. अलका जैन 'आराधना' :	मोनू का संकल्प	26
शिवचरण सरोहा :	यह रहती कहां है?	31
गिरिजा कुलश्रेष्ठ :	बिन्नी की जीत	32
मनोहर चमोली 'मनु' :	खाना मगर ध्यान से	35
हरिन्दर सिंह गोगना :	चिंटू की सूझबूझ	40
निश्चल :	स्वेटर	44
उषा सोमानी :	हम होंगे कामयाब	48
स्नेहा सिंह :	स्नेहा सिंह :	52

कविताएं

घमंडीलाल अग्रवाल :	दुनिया रहती दंग	13
रावेंद्रकुमार रवि :	दावत के मारे, ये सब बेचारे	27
राम करन :	टपकी ओस	42
राजेन्द्र श्रीवास्तव :	हरियल तोता	43
शिवचरण चौहान :	अपना मीत बनाऊं	46
पूरन सरमा :	जाड़ा बाबा क्यों आया?	47

बीते साल के सबक

हर बार एक नया साल आता है। हमें कुछ देता है या हमसे कुछ लेता है। यह चक्र चलता रहता है।

यह साल भी अलग नहीं रहा। 2021 का अंतिम महीना चल रहा है। कुछ दिनों में हम नए साल 2022 में प्रवेश कर जाएंगे। पर क्या नया साल हमें कुछ नया दे पाएगा?

2021 की शुरुआत कोरोना के कमजोर पड़ने के साथ हुई थी। लगा, अब यह बुरा सपना बीत गया। पर 2021 के पिटारे में बहुत कुछ बाकी था। कोरोना की दूसरी लहर ने दुनिया खासकर अपने देश भारत को झकझोर कर रख दिया। मंगल पर जाने का ख्वाब देख रहा इनसान बेबस होकर एक-एक कर अपनों को बिछड़ते देखता रहा, पर कुछ कर नहीं पाया। तथाकथित विकसित देशों के दंभ से भरे गालों पर यह प्रकृति का तमाचा था।

2021 का साल ऐसा साल रहा जिसमें नर्सरी से होकर केजी या प्रेप में बच्चे नहीं पहुंचे। अब 2022 में पहली कक्षा में वे बच्चे होंगे जिन्हें स्कूलिंग को कोई अनुभव नहीं होगा।

अपना देश भी बहुत उतार-चढ़ाव से साल भर जूझता रहा। भारतीय किसानों का एक बड़ा वर्ग खेतों को छोड़कर सड़कों पर धरना देकर बैठे रहना पड़ा। अब उनकी मुख्य मांगें पूरी हुई हैं, तो उम्मीद कर सकते हैं कि अब उन्हें खेतों में देख पाएंगे।

चीन के साथ तनातनी साल भर चलती रही और अब साल के इस अंतिम महीने में हमने अपने सबसे अनुभवी सैन्य नायक सीडीएस जनरल विपिन रावत को एक हेलीकॉप्टर दुर्घटना में खो दिया।

2021 जाते-जाते कोरोना के एक नए वेरिएंट ओमीक्रॉन का खतरा छोड़कर जा रहा है।

साल 2021 में कुछ अच्छा भी हुआ। जीवन कोरोना के साये से निकलता दिखाई दिया। बच्चे स्कूलों में देर से ही सही, पर लौटे।

पायस की शुरुआत इसी साल हुई और हमने भरपूर उतार-चढ़ाव के साथ सालभर का सफर पूरा किया है। सबका साथ बना रहा, तो यह सफर जारी रहेगा।

दिसंबर की ठंड शुरु हो चुकी है। यह साल का सबसे सुकून वाला महीना लगता है। ठंड में गर्म कपड़े पहनकर रजाई या कंबल में सिकुड़कर मूंगफली खाते हुए नए साल का इंतजार करने में अलग ही मजा है।

तुम बच्चों के प्यारे सांताक्लॉज भी तो तुम सबसे मिलने क्रिसमस से एक रात पहले आते हैं। उसके बाद फिर क्रिसमस के मजे।

इस बार पायस में क्रिसमस पर ढेरों सामग्री है। बस, पायस को ध्यान से पढ़ो और साथियों में इसे भेजकर इसके बारे में डिस्कस करो। भरोसा रखो, पायस तुम्हें कभी शर्मिंदा नहीं होने देगा।

अंत में, बुरी यादों को पीछे छोड़कर नए साल के शुभागमन की तुम्हारे साथ मुझे भी प्रतीक्षा है।

अनिल जायसवाल

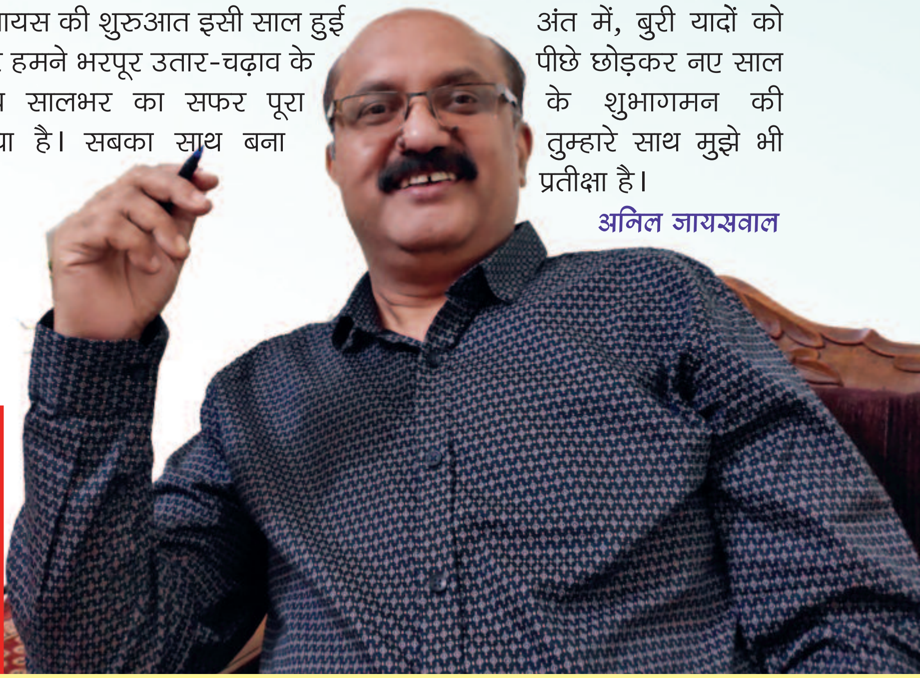

एक अपील

यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो कृपया पढ़ने के बाद इसका 20 रुपए शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका पायस

संपादक : अनिल जायसवाल

Email : payasmagazine@gmail.com
Facebook : https://www.facebook.com/payasbaalpatrika
Whatsapp : 7982014609
Youtube : payas magazine
https://youtube.com/channel/UCvXDRK5Xz_dwnFfGwtfGLJg
Blog : https://payasbaalpatrika.blogspot.com/

◆ लेखक व बच्चे रचनाएं भेजने के लिए ईमेल का प्रयोग करें।
◆ ह्वाट्सएप पर रचनाएं स्वीकार नहीं की जाएंगी।

संपादकीय पता : PAYAS MAGAZINE
Anil Jaiswal, 174-B, DDA Lal Qtrs,
West Punjabi Bagh, New Delhi-110026

धन्यवाद ज्ञापन

आप सबके सहयोग से जनवरी 2021 से बच्चों के लिए एक ऑनलाइन निशुल्क बाल पत्रिका निकालने की जो योजना थी, वह मूर्त रूप लेने में सफल रही। अब पायस का नया 12वां अंक आप सबके सामने है।

इस राह पर आप सबके भरोसा चला। सब साथियों का सहयोग मिला। जिन साहित्यकार साथियों से रचना मांगी, उन्होंने सहर्ष अपनी रचना के साथ शुभकामनाएं भी दीं। कुछ साथियों ने निशुल्क रचना देकर हिम्मत बंधाई, तो कुछ चित्रकार साथियों ने नाम मात्र का शुल्क लेकर कहानियों के लिए सुंदर चित्र बनाए। बहुत से साथियों ने पत्रिका को आर्थिक मदद दी, जिससे पत्रिका के लिए आवश्यक खर्चों को पूरा किया गया।

यहां उन साथियों को नमन, जिन्होंने पत्रिका के लिए आर्थिक मदद की।

1. मोनिका अग्रवाल
2. दीप्ति मित्तल

एक अपील

पत्रिका तैयार करने में धन की आवश्यकता होती है। तमाम खर्चों के बावजूद यह पत्रिका आप तक निशुल्क पहुंच रही है। अगर आप को लगे कि पत्रिका तैयार करने में मेहनत की गई है, तो पढ़ने के बाद 20 रुपए इसका शुल्क मानकर सहयोग करें।

धन्यवाद

भुगतान करना चाहें, तो

1 प्रति : 20 रुपए, एक वर्ष : 240 रुपए

एकमुश्त सहयोग : इच्छानुसार

आगे भी आप सबका सहयोग रहा, तो हम सब मिलकर इस पत्रिका को एक ऐसी ऊंचाई देने में सफलता प्राप्त करेंगे कि लोग हर महीने इस पत्रिका का बेसब्री से इंतजार करेंगे।

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA

Anil Kumar Jaiswal

S/A no- 20155811729

Ifsc code SBIN0005943

Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533

ANIL JAISWAL

संपादक : अनिल जायसवाल

9810556533, 7982014609

email : **payasmagazine@gmail.com**

हर त्योहार बहुत भाता है

हो त्योहार किसी का भैया
मजा मनाने में आता है।
हम बच्चे हैं, हमको सच में
हर त्योहार बहुत भाता है।

अपने तो त्योहार मनाएँ
औरों के भी साथ मनाएँ।
क्या जाता है बोलो-बोलो
मिलकर जो त्योहार मनाएँ?

जोसफ हो या हो वह अब्दुल
दीवाली घर मेरे आएँ।
उनके त्योहारों पर हम भी
खुशी-खुशी घर उनके जाएँ।

आओ करें हम क्रिसमस पर
काम भले से न्यारे-न्यारे।
सांता क्लॉज बनें अब पापा
हम बच्चों के प्यारे-प्यारे।

ले सांता को जल्दी-जल्दी
झोंपड़पट्टी मैं जाऊँगा।
खूब खिलौने सब बच्चों को,
मीठी कैंडी दिलवाऊँगा।

पर कहूँगा सांता जी से
गंदे बच्चों को भी कुछ दें,
लेकिन पहले उन बच्चों से
अच्छे बनने का वादा लें।

हो-हो, हो-हो हँसते-हँसते
कितने अच्छे लगते सांता।
उपहारों की लिए पोटली
हम बच्चों के प्यारे सांता।

अपने लेखक को जानिए

दिविक रमेश : दिल्ली विश्वविद्यालय में प्रोफेसर और प्रिंसिपल रहे। हिंदी के सुप्रतिष्ठित कवि, बाल-साहित्यकार, अनुवादक और चिंतक। विविध विधाओं में लगभग 80 पुस्तकें प्रकाशित।

सांताक्लॉज का प्रण

अनिल जायसवाल

आज 24 दिसंबर की रात थी। क्रिसमस की तैयारी पूरे विश्व में जोरों पर थी। पर आसमानी फरिश्ता के यहां हंगामा मचा था।

हंगामा यों शुरु हुआ था कि एक देव ने आकर सूचना दी, "बच्चों के पास जाने का समय हो गया है, पर सांता गायब हैं।"

"सांता गायब हैं, इसका क्या मतलब हुआ? जाओ, जाकर देखो, वह तैयारी में व्यस्त होंगे।"

"जी नहीं, हम तो उनके घर भी होकर आ गए। उनके घर में देखकर लगता नहीं कि उन्होंने पृथ्वी पर जाने की कोई तैयारी की होगी।"

आसमानी फरिश्ता के चेहरे पर परेशानी नजर आने लगी, "सांता के पृथ्वी पर जाने का सिलसिला टूट गया, तो बच्चों से हमारा नाता टूट ही गया समझो। फिर वह बोले, "जाकर कहीं से सांता को ढूंढ़कर लाओ।"

पर जाने की जरूरत नहीं पड़ी। उन्होंने देखा, सांता झूमते हुए चले आ रहे हैं। उन्हें देख सबकी जान में जान आई। आसमानी फरिश्ता बोले, कहां चले गए थे? दुनिया के तमाम बच्चे तुम्हारा इंतजार कर रहे होंगे।

सांता मुसकराकर बोले, "हे फरिश्ता, 24 के दिन मुझे पूरे 24 घंटे गिफ्ट बांटने में लगे रहना पड़ता है। अभी आधी दुनिया में गिफ्ट बांट चुका, अब थोड़ा और काम करने लौटा हूं।"

"क्या मतलब?" एक फरिश्ते ने पूछा।

"भाई, पूरी दुनिया में अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग समय पर रात होती है। अभी मैं पूरब घूम आया। वहां के बच्चों तक मनचाहा गिफ्ट पहुंच भी गया। अब पश्चिम और कुछ इलाके रह गए।"

"पर आपको गिफ्ट पैक करते किसी ने नहीं देखा। पहले आप गिफ्ट रखने को लेकर कितना परेशान रहते थे।" एक देव ने पूछा।

"इसे मैनेजमेंट कहते हैं। और यह मैंने पृथ्वी पर बच्चों से सीखा। मैंने सारा सामान पहले ही अपने दो साथियों के साथ पृथ्वी के दो छोरों पर भेज दिया था। एक छोर पर हुई रात में गिफ्ट्स बच्चों में बांट आया। अब दूसरे छोर पर थोड़ी देर में बाटूंगा।" सांता ने मुसकराकर बोला।

"तो आप लौटे क्यों?" एक देव ने पूछा, तो सांता चुप होकर गंभीर हो गए। फिर धीरे से बोले, "अब बच्चे होशियार हो गए हैं। सबके पास अपना या माता-पिता के मोबाइल हैं। वे एक-दूसरे को फोन से बता देते हैं कि उन्हें मैंने क्या गिफ्ट दिया।"

"तो इससे क्या फर्क पड़ता है?"

"फर्क ये पड़ता है कि बच्चे अपनी विश मोडिफाई करके नई विश करते हैं। और मेरा काम है उनकी विश पूरी करना। इसीलिए वापस लौटा हूं। बच्चों की कुछ नई मांगे आई हैं। वो सामान लेकर फिर पृथ्वी पर जा रहा हूं।" कहकर सांता तेजी से नए सामान की पैकिंग करने लगे।

सांता वापस पृथ्वी पर पहुंचे, तो अमेरिका की साइड में अंधेरा होने लगा था। वह तेजी से मैक्सिको में अपने सहायक के पास पहुंचे, तो उसे

रोते हुए पाया। उसके पास से वह जादुई थैला गायब था, जो अनगिनत सामान भरने के बाद भी हलका रहता था।

"थैला कहां है?" सांता घबराकर बोले।

"क्या बताऊं। अभी थोड़ी देर पहले कुछ लोग मुझपर हमला करके थैला ले गए।"

"तुमने रोका क्यों नहीं?" सांता थोड़े गुस्से से बोले।

"सर, हम यहां अपनी ताकत नहीं दिखा सकते, याद है न आपको?" साथी ने दुखी होकर जवाब दिया।

अब दोनों अदृश्य होकर उड़ते हुए थैली को ढूंढ़ने लगे। आखिर एक गंदी सी बस्ती में उन्हें भीड़ सी दिखाई दी। उस भीड़ के बीच में जादुई थैली पड़ा था और वहां उसके पास खड़े बच्चे रो रहे थे।

सांता उनके बीच जा पहुंचे। उन्होंने पूछा, "यह थैला आप लोग छीनकर क्यों लाए?"

"हमारे बच्चों को बहुत भूख लगी है। हमें लगा, इसमें खाना है। पर यह खाली है।" एक आदमी निराश स्वर में बोला।

"यह जादुई थैला है। इसमें गिफ्ट्स हैं, लो।" कहकर सांता ने गिफ्ट निकालकर बच्चों की ओर बढ़ाए। पर किसी बच्चे ने गिफ्ट लेने के लिए हाथ नहीं बढ़ाए। फिर एक बच्चा बोला, "अंकल, हम बच्चों को गिफ्ट में केवल खाना चाहिए। क्या आप हमें खाना दे सकते हैं?"

सांता निरुत्तर हो गए। उन्हें लगा, आज तक वह जो गिफ्ट बांटते थे, वह सब बेकार है। जब तक सब बच्चों का पेट नहीं भरता, यह गिफ्ट बांटना बेमानी है। उन्होंने आंखें बंद कर आसमानी फरिश्ते से प्रार्थना की, "हे देव। एक जादुई थैला और भेज दीजिए, जिसमें से मैं खाना निकालकर बच्चों को खिला सकूं।"

देखते-देखते थोड़ी देर में सांता के पास एक थैला आ गया। सांता ने मुसकराकर आसमानी फरिश्ते को धन्यवाद दिया।

फिर तो वहां के बच्चों में उनके मनपसंद खाने की वो दावत चली कि सब तृप्त हो गए। बच्चों के खिले चेहरे देख सांता ने प्रण किया, "अब हर साल दो थैले लेकर निकलूंगा। सामान बांटने से ज्यादा जरूरी भूखे बच्चों के चेहरे पर मुसकान लाना है।"

सांता ने अपना यह प्रण हर गिफ्ट पर भी लिख दिया। उन्हें उम्मीद थी कि इस मुहिम में बच्चे भी जुड़ेंगे और अपने आसपास के बच्चों का ख्याल रखेंगे। ✪

चित्र : इंदिरा

३ दिसंबर :
विश्व विकलांग दिवस पर विशेष

हम नहीं किसी से कम

दुनिया में इनसान के जिंदगी में परेशानियों की कमी नहीं है। परंतु अपने हौसले से वह इन सब परेशानियों से बार-बार पार पा लेता है। जिंदगी है, तो परेशानियां भी हैं, लेकिन जो पूरी तरह से स्वस्थ होते हैं, उनके लिए परेशानियों का सामना करना थोड़ा आसान होता है। लेकिन जो किसी भी तरह की बीमारी या शारीरिक रूप से किसी भी तरह से अक्षम होते हैं, तो उनके लिए जिंदगी में परेशानियों की कमी नहीं होती।

परंतु ऐसे में उनके अंदर का जीवट उन्हें औरों से अलग करता है और ऐसे अनेक इनसान हुए हैं, जिन्होंने अपनी इन कमियों को अपने गुणों के सहारे दूर करके लोगों के बीच अपनी इज्जत पाई है।

परेशानी यह है कि आमतौर पर एक स्वस्थ इनसान उन लोगों से खुद को श्रेष्ठ समझता है, जिनके शरीर का कोई अंग खराब हो या जो मानसिक तौर पर थोड़े कमजोर हो। और यही सोच उन्हें अपने को ऐसे लोगों से श्रेष्ठ समझने की गलतफहमी दे देती है। इंसान ऐसे लोगों को अपने रहमों करम पर समझने लगता है, जबकि ऐसा है नहीं।

आज, जब तरह-तरह के कानून के कारण दिव्यांगजन जिन्हें पहले अपंग या विकलांग कहा जाता था, एक से बढ़कर एक पद तक अपनी दावेदारी ले जा रहे हैं और साबित कर रहे हैं कि वे किसी से कम नहीं है।

सबसे पहले तो हमें अपनी सोच बदलनी चाहिए कि जो दिव्यांगजन हैं, उन्हें किसी तरह के सहारे या लोगों की दया की जरूरत है। अपने दिमाग से हमें यह बात निकाल देना चाहिए कि जो दिव्यांग है, वह तो बेचारे हैं और दूसरों की मेहरबानी पर जी रहे हैं।

सबसे बड़ी परेशानी यह है कि बाहर से पहले, घर में ही ऐसे लोगों को दया का पात्र समझ लिया जाता है। जबकि होना तो यह चाहिए कि ऐसे लोगों के मन में यह धारणा

बैठाया जाना चाहिए कि वह किसी से भी कम नहीं है। अगर किसी में कोई जन्मजात कमी है, तो बचपन से ही उसे इस चीज के लिए तैयार कर लेना चाहिए कि वह अपनी इस कमी को ही अपनी एक मजबूती बना ले।

दिव्यांग हर कोई जन्म से ही नहीं होता। कई बार परिस्थितियां और समय एक अच्छे भले इंसान को दिव्यांगजन बना देती हैं। किसी दुर्घटना में अपने हाथ-पैर या कोई अंग गवां देना या किसी बीमारी जैसे पक्षाघात के कारण शरीर के किसी अंग का ठीक से काम करना बंद कर देना इत्यादि भी इनसान को विकलांग श्रेणी में ला देता है। ऐसे में जरूरत होती है कि उन्हें सामाजिक रुप से हौसला दिया जाए ना कि उन्हें दया का पात्र समझा जाए।

इन्ही भावनाओं को सामने रखकर सरकार ने दिव्यांगजनों के लिए तरह-तरह की घोषणाएं की हुई हैं। इनमें इनके लिए विशेष आरक्षण के द्वारा ट्रेन में आने-जाने पर कई तरह की छूट और दिल्ली जैसे प्रदेश में बसों में निशुल्क यात्रा और विकलांग पेंशन भी है।

आज भारत में कई ऐसे आईएएस ऑफिसर हैं, जो विकलांग होते हुए भी अपनी एक अलग पहचान बनाने में सफल हुए हैं। कुछ साल पहले एक विकलांग लड़की ने टॉप किया था और वह आज एक सफल आईएएस ऑफिसर हैं।

विकलांगों को भी समान रूप से अवसर मिले, इसलिए उनके लिए अलग से पैरा ओलंपिक भी कराए जाते हैं। विकलांग उसमें बड़े उत्साह के साथ भाग लेते हैं और अपनी काबिलियत दिखाते हैं। इसी साल विकलांगों के लिए हुए पैरालंपिक में भारत के कई खिलाड़ियों ने धमाकेदार प्रदर्शन किया और कई स्वर्ण पदक जीते। अच्छी बात यह है कि उन्हें भी उतनी ही इज्जत के साथ इनाम दिए गए, जितना आम ओलंपिक के विजेताओं को दिए गए थे। आज इसी की जरूरत है। इन्हें किसी भी तरीके से यह महसूस नहीं होने देना चाहिए कि वे औरों के मुकाबले में कहीं कम है।

अगर एक दिव्यांग इनसान अपने मन में ठान ले, तो वह एक स्वस्थ आदमी से भी आगे निकल सकता है। इसका सबसे बड़ा उदाहरण वैज्ञानिक हॉकिंस हैं। करीब 50 साल तक व्हीलचेयर पर रहकर और ना बोलने की स्थिति और हिलन-डुलने में असमर्थ रहते हुए भी उन्होंने बिग बैंग थ्योरी पर एक से बढ़कर एक काम किया।

भारत के एक महान राजा राणा सांगा की एक आंख नहीं थी। उनका अंग भंग था, फिर भी वह अपने जमाने के बहुत बड़े योद्धा माने जाते हैं। रविंद्र जैन भारतीय सिनेमा के एक जाने-माने गीतकार और संगीतकार रहे हैं । वह करीब-करीब नेत्रहीन थे परंतु उनके लिखे गीत और संगीत के कारण उनका स्थान आज भी बहुत ऊंचा है।

ये सारे उदाहरण हमें यही सिखाते हैं कि अगर इनसान ठान ले, तो कोई भी उसके रास्ते में किसी तरह के ठहराव नहीं ला सकता।

सांता का गिफ्ट

सौरभ जब भी अपनी बालकनी में खड़ा होता, तो टोनी अंकल को अकसर अपने लॉन में उदास बैठे देखा करता था। ऑफिस से आने के बाद, अपने घर के बड़े से लॉन में आरामकुर्सी डाले चुपचाप बैठे रहते थे। लोग समझते थे कि वह अपने बगीचे में झूमते-लहराते फूलों को निहारते रहते हैं।

लेकिन सौरभ को पता था कि वह फूलों के बीच बैठे हुए भी किसी सोच में डूबे रहते हैं। कोई पीड़ा थी, जो उनके चेहरे पर अकसर दिखाई देती थी, और सौरभ को वह न जाने कैसे नजर आ जाती थी। हालांकि उन्हें गार्डनिंग का बेहद शौक था और जब भी वक्त मिलता, वह अपने फूल-पौधों की देखभाल ऐसे प्यार से करते, मानो उनके बच्चे हों। उनके घर में कोई बच्चा नहीं था।

बस वे दो ही लोग थे। एक टोनी अंकल और मार्था आंटी, जो हमेशा अपने गले में लटके क्रॉस को चूमती नजर आतीं। उनका अधिकांश समय ईश्वर की प्रार्थना में ही गुजरता था। उनके घर का काम करने वाली रोजी बाजार से सारा सामान लाती। सारी खबरें भी वही उन्हें देती, वरना वे दोनों तो किसी से मिलते-जुलते ही नहीं थे।

सौरभ जब भी उनके घर जाता, वे दोनों खुश हो जाते। बगीचे के फूलों और अपनी आरामकुर्सी को छोड़ टोनी अंकल उससे बातें करने घर के अंदर आ जाते। वे लोग कभी कैरम खेलते, तो कभी लूडो। मार्था आंटी उसे केक बनाकर खिलातीं। उस पल वह बार-बार अपने क्रॉस तक को चूमना भूल जातीं। अंकल-आंटी दोनों बहुत ही ध्यान से उसकी छोटी-छोटी बातों को सुनते थे। उसके मम्मी-पापा तो इतने व्यस्त रहते थे कि उनके पास उसके लिए समय तक नहीं था। हालांकि सौरभ जो भी मांगता, उसे फौरन वे दिला देते थे, इसलिए कभी इस बात को उन्होंने समझा ही नहीं कि उसे उनका समय भी चाहिए। वह उनके साथ अपनी

चित्र : नीतू खोहवाल

बातें शेयर करना चाहता है। उसके कमरे को भी उन्होंने खास ढंग से डिजाइन करवाया था और सारी सुविधाएं उसके लिए जुटा रखी थीं।

उसकी देखभाल करने के लिए नौकर थे और वह जब चाहे, ऑर्डर करके अपने लिए कुछ भी मंगा सकता था। लेकिन अपने आलीशान घर और लेटेस्ट गैजेट्स के बीच जब वह खुद को अकेला पाता, तो पड़ोस में रहने वाले टोनी अंकल के घर दौड़ा चला आता, जहां से ढेर सारा प्यार मिलता। वे उसके साथ खेलते तो वह खुश हो जाता।

उसे एक बात बहुत हैरान करती थी कि ईसाई धर्म के होने के बावजूद वे कभी क्रिसमस नहीं मनाते थे। स्कूल में इन दिनों क्रिसमस को लेकर कितनी बातें हो रही थीं। उसके ईसाई दोस्त बताते थे कि वे कितनी तैयारियां करते हैं। पर वे दोनों न कभी क्रिसमस ट्री लाते थे, न ही घर को सजाते थे। जबकि उसके घर में उसके मम्मी-पापा ईसाई न होने के बावजूद क्रिसमस पार्टी देते थे और अपने सारे दोस्तों को बुला मौज-मस्ती करते थे। वह कहते थे इस बहाने फ्रेंड्स के सामने अपनी शान दिखा सकते हैं और उनका सोशल स्टेट्स इस तरह और बढ़ जाता है।

दस साल का सौरभ अब बहुत सारी बातें समझने लगा था। एक दिन मार्था आंटी ने जब अपने बेडरूम से उसे एक किताब उठाकर लाने को कहा था, तो उसने वहां एक बच्चे की तसवीर टंगी देखी थी। उसने पूछा कि वह कौन हैं, तो आंटी बात टाल गई थीं और उसे अपने हाथों से पुडिंग खिलाने में उलझा लिया था। मम्मी ने कहा था एक बार कि उनके कोई बच्चा नहीं है, तो वह किससे खेलने उनके घर जाता है।

क्रिसमस आने ही वाला था और वह चाहता था कि वह उसे अंकल-आंटी के साथ मनाए। मम्मी-पापा उसे हर साल सांताक्लॉज की ड्रेस पहना देते थे ढेर सारे गिफ्ट खरीद कर देते थे, जिन्हें वह घूम-घूमकर अपने फ्रेंड्स को बांटा करता था। उसे खुशी होती थी कि मम्मी-पापा उसे उपहार बांटने देते हैं और इस वजह से हर साल उसके दोस्तों की संख्या भी बढ़ती जा रही थी। उसे कहां पता था कि ऐसा वे अपना रुतबा जमाने के लिए करते हैं न कि उसकी खुशी के लिए।

अब तो उसे यह भी पता था कि मम्मी-पापा जो उपहार उसके तकिए के नीचे रखा करते थे, वह सांताक्लॉज नहीं लाता था।

"आंटी, इस साल मैं आपके साथ क्रिसमस मनाना चाहता हूं। मम्मी-पापा गोआ जा रहे हैं।" कैरम खेलते-खेलते सौरभ ने कहा।

मार्था आंटी किचन से बाहर आते हुए बोलीं," बेटा, हम क्रिसमस सेलीब्रेट नहीं करते।"

"पर क्यों? आप तो क्रिश्चन हैं और यह आपका सबसे बड़ा त्योहार होता है।"

"माई चाइल्ड, जब से हमारा बेटा गॉड के पास गया है, तब से मार्था ने इसे मनाना छोड़ दिया है। वह घर में उस दिन लाइट्स भी जलाना पसंद नहीं करती। हमारा बेटा, हमारा नन्हा सांताक्लॉज एक फरिश्ते की तरह था और इस त्योहार पर खूब सुंदर सांता बनता था। हम चर्च जाते और यीशू से प्रेयर करते हैं कि वे किसी से उसका बच्चा न छीनें।" टोनी अंकल ने प्यार से उसे थपथपाते हुए कहा।

"अंकल, मैं भी आपका बेटा हूं। मैं भी तो आपका सांता हूं, मेरे साथ क्रिसमस नहीं मनाएंगे?"

मार्था ने कुछ कहना चाहा, तो अंकल ने उसे रोक दिया। वह सौरभ का दिल नहीं तोड़ना चाहते थे।

क्रिसमस ट्री को रंग-बिरंगे बल्बों, चमकीले कागजों और उपहारों से सजा सौरभ जब सफेद दाढ़ी लगाए और सांता क्लॉज की लाल ड्रेस पहने उनके घर पहुंचा, तो उन्हें लगा कि उनका बेटा जैसे वापस आ गया है। मार्था ने उसे सीने से चिपटा लिया।

"आज तो हम तुम्हें गिफ्ट देंगे।" अंकल ने केक के बड़ा सा टुकड़ा उसके मुंह में डालते हुए एक पैकेट उसे थमा दिया। अंकल-आंटी ही नहीं, आज सांताक्लॉज बना सौरभ भी बहुत खुश था। उसने उनके साथ मिलकर पूरे घर में कैंडल लगा दीं और हर तरफ रोशनी कर दी।

फिर अंकल, आंटी को साथ लेकर सौरभ बड़े से बैग में उपहार डाल उन्हें दोस्तों में बांटने निकल गया।

टोनी और मार्था को लग रहा था, मानो सचमुच सांता बन उनका बेटा लौट आया है। आज सांता ने उन्हें सबसे बड़ा गिफ्ट दिया था।

अपने लेखक को जानिए

सुमन बाजपेयी : **पिछले 33 वर्षों से कहानी, कविता, महिला विषयों, बाल-लेखन व अनुवाद में संलग्न। अनुवाद के क्षेत्र में एक बड़ा नाम। 160 से ज्यादा पुस्तकों का अनुवाद कर चुकी हैं। छह कहानी संग्रह समेत अन्य विषयों पर पुस्तकें प्रकाशित। चिल्ड्रन्स बुक ट्रस्ट में बतौर संपादक (हिन्दी विभाग) कार्य व जागरण सखी, मेरी संगिनी, फोर्थ डी वूमेन नामक पत्रिकाओं में विभिन्न संपादकीय पदों पर कार्य। हिन्दी व अंग्रेजी दोनों भाषाओं में लेखन**

संप्रति : स्वतंत्र लेखन

4 दिसंबर :
विश्व बैंक दिवस पर विशेष

इंटरनेशनल बैंक डे

आधुनिक समाज में बैंकिंग सुविधा के बिना गुजारा नहीं चल सकता। 19 दिसंबर 2019 को, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने बहुपक्षीय विकास बैंकों और अन्य अंतर्राष्ट्रीय विकास बैंकों की समाज के हित में कार्य को मान्यता दिलाने के लिए 4 दिसंबर को बैंकों के अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में घोषित किया।

सितंबर 2015 में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने दुनियाभर में सारे विकास लक्ष्यों और उन लक्ष्यों के व्यापक, दूरगामी परिणाम पर ध्यान देकर 2030 तक उन लक्ष्यों को पूर्ण करने का प्रयास करने की रूपरेखा बनाई। उनके अनुसार गरीबी को दूर करना, बहुत जरूरी है क्योंकि गरीबी अपने सभी रूपों में सबसे बड़ी वैश्विक चुनौती है। इसे मिटाना दुनिया के विकास के लिए जरूरी है।

इस लक्ष्य को संयुक्त राष्ट्र संघ आर्थिक, सामाजिक और पर्यावरणीय संतुलन रखते हुए प्राप्त करना चाहता है। आज गरीबी को मिटाना, असमानता को कम करना और जलवायु परिवर्तन के चुनौतियों से निपटने के लिए सरकारों को, निजी क्षेत्र और नागरिक समाज के साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है। यहीं बैंकों का महत्त्व पता चलता है।

निजी उद्योगपति और अमीर केवल उन क्षेत्रों में पैसा लगाते हैं, जहां से कमाई हो सके। ऐसे में गरीबों के लिए कल्याण योजनाएं पीछे रह जाती हैं। लंबे समय तक चलने वाली निवेश परियोजनाओं के लिए धन देने में अमीर उद्योगपति संकोच करते हैं।

इसलिए, यह सभी स्तरों पर निश्चित करने की आवश्यकता है कि गरीबों के लिए चल रही योजनाएं प्रभावित न हों और 2030 के एजेंडा को पूरा किया जा सके।

2030 एजेंडा को पूरा करने के लिए एक स्थायी वित्तीय प्रणाली बनाने की आवश्यकता है। इस प्रणाली द्वारा अच्छी तरह से चल रहे राष्ट्रीय विकास बैंक, देशों को विकास लक्ष्य से संबंधित निवेश के लिए फंड पाने में मदद कर सकते हैं।

बुनियादी ढांचे, ऊर्जा, कृषि, औद्योगीकरण, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नए उद्योगों के साथ-साथ सूक्ष्म, लघु और मध्यम आकार के उद्यमों के क्षेत्र में बैंक ही आगे आकर विकास की गति को बढ़ा सकते हैं और गरीबी मिटाने में मदद कर सकते हैं।

भारत में आधुनिक बैंकिंग की उत्पत्ति

18वीं शताब्दी के अंतिम दशक में भारत में आधुनिक बैंकिंग प्रणाली की शुरुआत हुई। सबसे शुरुआती बैंकों में से एक बैंक 'बैंक ऑफ हिंदुस्तान' था, जिसे 1770 में स्थापित किया गया। फिर 'जनरल बैंक ऑफ इंडिया' की स्थापना 1786 में हुई, लेकिन यह सफल न हो पाया और जल्दी ही बंद हो गया।

सबसे बड़ा और सबसे पुराना बैंक जो अभी भी अस्तित्व में है, वह 'भारतीय स्टेट बैंक' है। यह 1806 में 'बैंक ऑफ कलकत्ता' के रूप में शुरू किया गया था। 1809 में, इसका नाम बदलकर 'बैंक ऑफ बंगाल' कर दिया गया।

यह प्रेसीडेंसी सरकार द्वारा स्थापित तीन बैंकों में से एक था। अन्य दो 1840 में 'बैंक ऑफ बॉम्बे' और 1843 में बनाए गए 'बैंक ऑफ मद्रास' थे। इन तीनों बैंकों को 1921 में 'इंपीरियल बैंक ऑफ इंडिया' बनाकर विलय कर दिया गया था। यही बैंक 1955 में भारतीय स्टेट बैंक बन गया।

1969 में, भारत सरकार ने 14 प्रमुख निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण कर दिया था।

अब फिर से भारत में निजी बैंकों का बोलबाला बढ़ रहा है।

दुनिया रहती दंग

अपने लेखक को जानिए

घमंडीलाल अग्रवाल : सेवानिवृत्त अध्यापक। 1970 से लेखन। पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन। दूरदर्शन व आकाशवाणी से प्रसारण। पाठ्यक्रम में बाल रचनाएं शामिल। 108 पुस्तकें प्रकाशित। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत।

भले अंग कोई ग़ायब हों
हम हैं जन दिव्यांग,
लेकिन देख हमारी प्रतिभा
दुनिया रहती दंग।

हमने भी तो किए अनूठे
इस समाज में काम,
इसीलिए सबके होठों पर
आए अपना नाम।

विदुषी हैं,विद्वान कई हैं
जो दिव्यांग रहे,
प्रतिभा का लोहा मनवाया
कष्ट हज़ार सहे।

इतने गुणी हुए अष्टावक्र
लिखी' संहिता', 'गीता',
कृष्ण-काव्य रच सूरदास ने
जन-जन का मन जीता।

राम भद्राचार्य आशु कवि
बाईस भाषा ज्ञाता,
और अरुणिमा सिन्हा की तो
महिमा यह जग गाता।

कृत्रिम पैरों से करती हैं
सुधा चंद्रन नृत्य,
दांतों तले रखें उँगली लख
इरा सिंघल के कृत्य।

हॉकिंस एक प्रसिद्ध विज्ञानी
परिचित दुनिया वाले,
सच पूछो तो दिव्यांगों के
करतब बड़े निराले।

हो असली दिव्यांग वही पर
सुनिए बात हमारी,
कर्म, ज्ञान की, बुद्धि, प्रेम की
जिसमें कमियाँ सारी।

हम तो ऐसी निर्मल बूँदें
जो टपकें बादल से,
पथ की दूर हटा बाधाएँ
मिलते सागर-जल से।

हीन न समझो, दीन न समझो
हमको देखो-भालो,
अपनी सोच बदल डालो तुम
प्यार हमारा पा लो।

क्या वे होते हैं?

चित्र : इंदिरा

विशाल वृक्ष की तेरहवीं शाखा से उलटा लटकने वाले ने अचानक पूछा, " क्या आदमी होते हैं?"

तुरंत ही कई खोपड़ियां 360 डिग्री घूम गईं और उसकी तरफ डर, गुस्से और असंमजस से देखने लगीं।

सन्नाटा तो पहले ही छाया था। अब और गंभीर हो गया। फिर वृक्ष की सबसे ऊंची चोटी पर बैठे भूत ने जवाब दिया, "होते हैं! मगर सबको नजर नहीं आते।"

तेरहवीं शाखा के भूत ने फिर उतनी ही उतावली से पूछा, "क्यों?"

चोटी का भूत बोला, "क्योंकि वे दूसरी दुनिया में रहते हैं। इसलिए हमें वो नजर नहीं आते और हम उन्हें दिखाई नहीं देते।"

उतावले भूत ने अगला सवाल पूछा, "उन्हें देखना हो तो।?"

चोटी के भूत ने कहा, "ना देखो, तो ही अच्छा है। आदमी से दूर रहना ही भूतों के लिए अच्छा है।"

"क्यों, क्या वे हमें मार सकते हैं?" किसी और ने पूछा

"नहीं।" चोटी का भूत बोला, "मारने से भी बुरा कर सकते हैं।"

"वो क्या?"

"इस्तेमाल!"

"वो क्या होता है?" ये सवाल कई भूतों ने पूछा।

जवाब के लिए चोटी का भूत रुक गया। वह कुछ सोचने लगा। तभी उसकी नजर वृक्ष के नीचे से गुजरते एक खूंखार भेड़िए जैसे जंगली कुत्ते पर पड़ी।

उसने कहा, "आदमी तो इस खूंखार जानवर को भी पकड़कर अपने साथ ले गया और अपना पहरेदार बना लिया। जो भी जानवर या परिंदा उसकी नजर में आया, उसने उसका इस्तेमाल अपने फायदे

के लिए किया। खाने-पीने, ओढ़ने-बिछाने, सवारी करने या फिर मनोरंजन के लिए।"

चोटी पर बैठे भूत की बात सुनकर कई भूत सिहर गए। कुछ भूत दूसरी तरह से सोचने लगे। एक बोला, "आदमी हमसे डरता है या हम आदमी से?"

चोटी का भूत बोला, " वैसे तो दोनों ही एक-दूसरे से डरते हैं, मगर सच्चाई का पता तो सामना होने पर चल सकता है।"

इस बीच जोर से बारिश होने लगी और सब भूत अपनी शाखाओं को छोड़कर हवा में लहराने और नाचने लगे। हर बारिश में यह उनका प्रिय खेल था।

सिर्फ चोटी का भूत अपनी जगह पर बैठा रहा। उसने कई वर्षों से इस जगह पर कब्जा जमा रखा था। उसका मानना था, जो चोटी पर रहता है, उसे सब कुछ नजर आता है। इसलिए वह डरता था कि उसके हटते ही दूसरा भूत वहां बैठ जाएगा।

बारिश के बंद होते ही सारे भूत अपनी-अपनी जगह पर जा बैठे।

उतावला भूत फिर शुरू हो गया, "मुझे एक आदमी को पकड़ना है। उसे पकड़कर मैं उसका इस्तेमाल करूंगा। फिर तो सब कुछ मेरी मुट्ठी में होगा।"

उसकी बात सुनकर कई भूत जोर-जोर से हंसने लगे। इतनी जोर से कि वृक्ष के पत्ते कांपने लगे।

एक भूत बोला, "भाई, फिर तो तुझे आदमी पकड़ने वाले ओझा की मदद लेनी पड़ेगी।"

उतावला भूत चौंका, "आदमी पकड़ने वाला ओझा? अच्छा! कौन है वो? कहां मिलेगा?"

जवाब पीपनी की तरह बोलने वाले एक भूत ने दिया, " अरसा हो गया, एक बोरा लेकर वह गया था आदमी पकड़ने। अब तक नहीं लौटा। लगता है, आदमियों के ओझा ने ही उसे पकड़ लिया।"

लेकिन उतावले भूत को तसल्ली नहीं हुई। वह उस ओझा का इंतजार न करके एक दिन, बल्कि एक रात को अकेला निकल लिया, आदमी को ढूंढ़ने। वह चलता गया, उड़ता गया, तैरता गया। दिन-रात। मौसम-समय के पार और एक दिन जा पहुंचा आदमियों के बीच।

अब वह आदमियों को देख सकता था। मगर आदमी उसे नहीं देख सकते थे। यहां वह सिर्फ एक तमाशबीन था, वह कुछ नहीं कर सकता था। यहां की दुनिया उसे पल-पल हैरान और परेशान कर रही थी।

और आखिर में उसे एक आदमी ने देख लिया। वह ओझा था और बड़े दिनों से भूत पकड़ने की फिराक में था। उतावला भूत समझ गया। वह भागा। ओझा भी उसके पीछे भागा। दोनों सात दिन-सात रात तक भागते रहे। फिर हांफ कर एक नदी के दो किनारों पर बैठ गए। दोनों ने जम कर पानी पीया। फिर उतावले भूत ने आदमी से पूछा, "तुम मुझे क्यों पकड़ना चाहते हो?"

आदमी बोला, "तुम्हारी ताकत से अजब-गजब कारनामे करने के लिए।

भूत बोला, " अरे मैं भी तो इसी आस के साथ तुम्हें पकड़ने आया हूं। मगर मेरे कारनामों से तुम्हें क्या फायदा होगा? और किन कारनामों की बात कर रहे हो?"

आदमी बोला, " तुम गड़े खजानों का पता बता सकते हो। कोई मनचाही कीमती चीज लाकर दे सकते हो।"

भूत हंसा, बोला, "मेरे पास ऐसी कोई शक्ति नहीं है। बल्कि मैं तो तुम्हारी मदद से अपनी भूत-दुनिया को सुधारना चाहता हूं। तुम्हें इस्तेमाल करूंगा मैं।"

आदमी और जोर से हंसा, "मेरा इस्तेमाल। मैं दूसरों को इस्तेमाल करना नहीं जानता। कोई कारनामा नहीं कर सकता। शायद इसीलिए मेरी दुनिया के लोग मुझे नालायक समझते हैं। मैं तुम्हारी मदद क्या करूंगा, मैं तो खुद दूसरों पर बोझ हूं।" यह कहकर आदमी जोर-जोर से रोने लगा।

भूत अच्छी मुसीबत में पड़ा। वह आदमी को चुप कराते हुए बोला, "शायद हम दोनों की समझ में आ गया है, कि हम एक दूसरे की मदद नहीं कर सकते। यह ज्यादातर भूतों या आदमियों के बस की बात नहीं। इसलिए ये आस छोड़कर लौटने में ही भलाई है।"

आदमी आंसू पोंछते हुए बोला, "भूत भाई, आदमी की कमजोरी की कहानी अपनी दुनिया को मत बताना। वरना..."

लेकिन तब तक भूत गायब हो चुका था। ✪

अपने लेखक को जानिए

समीर गांगुली : हिंदी बाल साहित्य में अपनी एक अलग पहचान बनाने वाले समीर गांगुली की कहानियां तकरीबन हर प्रतिष्ठित बाल पत्रिका में स्थान पाती रही हैं। दो दशक तक सार्वजनिक क्षेत्र की एक बीमा कंपनी में नौकरी के बाद अब पूरी तरह से हिंदी विज्ञापन लेखन का कार्य करते हैं।

10 दिसंबर :
ह्यूमन राइट्स डे पर विशेष

मानवाधिकार दिवस

आखिर मानवाधिकार कहां से शुरू होते हैं? ये छोटी-छोटी जगहों में, घर के पास, इतने पास से शुरू होते हैं कि दुनिया के किसी भी नक्शे पर नहीं देखे जा सकते। अगर इन अधिकारों का घर में कोई अर्थ नहीं है, तो उनका विश्व में भी कहीं कोई अर्थ नहीं है। इन मानवाधिकारों को अपने घर में लागू किए बिना, हम बड़ी दुनिया में प्रगति करते नहीं देख सकते।

मानव के इतिहास के साथ ही मानवाधिकार का इतिहास शुरू हो जाता है। हर इंसान को जीने का अधिकार है और इस अधिकार का सम्मान होना चाहिए। परंतु पता नहीं इंसान यह क्यों भूल जाता है कि वह जिस पर अत्याचार करता है, वह भी तो मानव है।

जब तक दुनिया में ताकत का शासन रहा, मानव के अधिकारों के साथ जमकर खिलवाड़ हुआ। राजा के जमाने में उसकी प्रजा के पास कोई अधिकार नहीं होता था, वह तो राजा, उसके अधिकारियों के रहम पर आश्रित रहते थे। राजा की मनोदशा के अनुसार उसके साथ व्यवहार होता था क्योंकि राजा का मतलब ही असीमित अधिकार का स्वामी होता है। तुम बच्चों की कहानियां जरूर इस तरह शुरू होती है कि एक राजा बड़ा नेक था और प्रजा का बहुत ध्यान रखता था, पर ऐसे बिरले ही राजा हुए होंगे। राजशाही में इंसाफ राजा के मूड और समझ पर निर्भर करता था। ऐसे में मानवाधिकार की बात तो सपने जैसी लगती है।

राजसत्ता दुनिया से करीब-करीब खत्म हो गई। दुनिया में लोकतंत्र आया, पर कई जगह तानाशाही भी है। तानाशाही तो वैसे भी ताकत के बल पर किया जाने वाला शासन है, पर लोकतंत्र में जहां लोगों का शासन माना जाता है, वहां भी मानवाधिकार की खूब खिल्ली उड़ाई जाती है। लोकतंत्र में सत्ता में रहने के लिए लोगों के वोट की जरूरत पड़ती है। इसलिए वोट की खातिर कई बार ऐसे निर्णय लिए जाते हैं, जिनसे मानव को अधिकारों का हनन होता है।

माना जाता है कि मानवाधिकार पर आधारित अर्थव्यवस्था गरीबी के चक्र को तोड़ सकती है। व्यापक गरीबी, व्यापक असमानताएं और किसी तरह का भेदभाव मानवाधिकारों का उल्लंघन है और यह हमारे समय की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है। इस असमानता को खत्म करने में सभी की भागीदारी, विशेष रूप से सबसे अधिक प्रभावित लोगों की भागीदारी की ज्यादा जरूरत है।

सबसे पहले तो जरूरी है कि हम यह समझें कि मानवाधिकार क्या है? इस दुनिया में जो भी है, चाहे पेड़-पौधे, समुद्र, नदियां, वातावरण सबका अपना अधिकार है। उनके अधिकारों का हम सम्मान करेंगे, तो ही दुनिया ठीक से चल पाएगी। उनके अधिकार हैं कि हम उन्हें प्रदूषित करके खराब न करें, उन्हें साफ-सुथरा रखें। इसी तरह जो मानव हैं, उनके भी अधिकार होते हैं, जीवन का अधिकार, समानता का अधिकार। यह अधिकार पुरुष,

महिला और बच्चे सबका है। पर हम जानतें हैं कि दुनिया कि सारी व्यवस्था ऐसी बनाई गई है कि सत्ता पर पुरुष का अधिकार रहे। यह व्यवस्था इतनी बुरी तरह से हम सबके मन में समा चुकी है कि पिछले दिनों भारत में सरकार ने सर्वे कराया कि पति द्वारा पत्नी को मारना सही है या गलत। ऐसे में भारत के 14 राज्यों की महिलाओं ने ऐसी शर्मनाक हरकत को सही ठहराया। यहीं मानवाधिकार के लिए लोगों को जागरुक करने की जरूरत महसूस होने लगती है।

अनुचित कोरोना वैक्सिन वितरण और जमाखोरी के माध्यम से वैक्सिन को जरूरतमंद गरीब देशों तक न पहुंचने देना भी मानवाधकार का उल्लंघन है। अफ्रीका में सबसे कम वैक्सिनेशन हुआ। हालत यह है कि वहां शुरु हुए कोविड के नए वैरियंट ने फिर से दुनिया भर में खतरे की घंटी बजा दी है। अगर वहां के लोगों के मानवाधिकार का सम्मान करते हुए वहां भी टीकाकरण ठीक से किया गया होता, तो शायद यह स्थिति ही नहीं आती।

नस्लवाद भी मानवाधिकार में हनन ही है। इंग्लैंड और अमेरिका जैसे विकसित देश लोगों को यह ध्यान दिलाते रहते हैं कि मानव कितना भी तरक्की कर ले, पर उसके अंदर की गंदगी जल्दी खत्म नहीं होती।

अमेरिका में अश्वेत के साथ भेदभाव करके आए दिन उनके मानवाधिकारों का हनन किया जाता है। इसलिए वहां श्वेत और अश्वेत में भयंकर असमानता के कारण खूनी संघर्ष चलता रहता है।

इंग्लैंड के यॉर्कशायर क्रिकेट क्लब के अश्वेत क्रिकेटर अजीम रफीक ने बताया कि इस क्लब के लिए खेलने वाला गैर इंग्लिश खिलाड़ियों को बार-बार अहसास दिलाया जाता था कि वे बाहरी हैं और उनके बराबर के नहीं हैं। भारत के प्रसिद्ध क्रिकेटर चेतेश्वर पुजारा को वे स्टीवर्ट कहकर अपमानित करते थे। यह सब अश्वेतों के समानता के मानवाधिकार की धज्जियां उड़ाने वाली बात हैं। इसमें क्लब के खिलाड़ी ही नहीं, उसे चलाने वाले अधिकारी, इंग्लैंड के चयनकर्ता, कप्तान और क्लब के चेयरमैन तक शामिल थे।

समानता और गैर-भेदभाव ही दुनिया में हिंसा और भेदभाव के रोकथाम की कुंजी है।

सभी के लिए मानवाधिकार यह सुनिश्चित करते हैं कि सभी को न्याय मिले।

यह भी गलत है

- घर में महिलाओं का दिन भर काम में जुटे रहना कि यह तो उनका ही कार्य है, एक तरह से उनके मानवाधिकार का हनन है।
- एक बच्चे का यह अधिकार है कि उसे बढ़िया जीवन और शिक्षा मिले, इसमें किसी प्रकार की कटौती उनके मानवाधिकार का हनन है।
- गरीब देशों के साथ बड़े देश भेदभाव करते हैं, जो अंत में उन देशों के नागरिक के मानवाधिकार में हनन बन जाता है।
- अफगानिस्तान जैसे देश पर जब तालिबान जैसे हिंसक कब्जा कर लेते हैं, तो सबसे पहले वहां के लोगों के अधिकार पर हमला होता है जो मानवाधिकार का ही हनन है।
- अपने देश में सरकार की आलोचना करने पर यदि किसी को परेशान किया जाता है, तो यह भी मानवाधिकार पर हमला माना जाता है, जो अक्सर उत्तरी कोरिया और चीन जैसे देशों में होता है।
- आज सारी दुनिया कोविड से परेशान है। बड़े देशों ने वैक्सिन बनाकर या बनवाकर खुद को सुरक्षित करने का प्रयास किया, पर गरीब देश जिनकी इसमें कोई गलती नहीं है, वे वैक्सिन की राह ही देख रहे हैं, जो वहां के लोगों के मानवाधिकार में हनन है।

जुकामी चाचा

जुकामी चाचा का असली नाम क्या था, यह तो अब उनको भी याद न था, किंतु उनके नाम की शोहरत यह थी कि उनका मोहल्ला भी अब जुकामी चाचा के मोहल्ले के नाम से जाना जाता था।

दरअसल जुकाम के कारण उनकी नाक के दोनों छेद नगरपालिका के गटर की तरह बारहों महीने उफनाया करते थे। इससे प्रभावित होकर मोहल्ले के एक खुराफाती बच्चे ने एक बार उन्हें 'जुकामी चाचा' कह दिया। लोगों को यह नाम इतना पसंद आया कि उनका यही नाम हो गया।

जुकामी चाचा गुणों की खान थे। उनके किस गुण को गिनवाया जाए और किसे नहीं, यह तय कर पाना मुश्किल था। कंजूसी के क्षेत्र में तो जुकामी चाचा ने ऐसे-ऐसे रिकॉर्ड बनाए हैं कि 'गिनीज बुक्स' के एक से लेकर दस नंबर तक के रिकॉर्ड पर उन्हीं का कब्जा पक्का समझिए। अपनी कंजूसी के चलते उनका अक्सर तमाशा बन जाता, लेकिन उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। मोहल्ले के बड़े-बुजर्गों ने भी कई बार समझाया कि इतनी कंजूसी ठीक नहीं। मगर जुकामी चाचा का कहना था कि पैसे बचाना कंजूसी नहीं बल्कि एक आर्ट है, जो सबके बस की बात नहीं। पैसे बचाने के लिए उनके पास एक से बढ़कर एक नुस्खे थे।

अब सिर के बालों को ही लीजिए। ज्यादातर लोग इन्हें बढ़ाने के लिए पहले महंगे-महंगे तेलों और शेम्पुओं पर पैसा खर्च करते हैं, फिर उन्हें कटवाने के लिए पैसा बर्बाद करते हैं।

जुकामी चाचा की नजर में यह

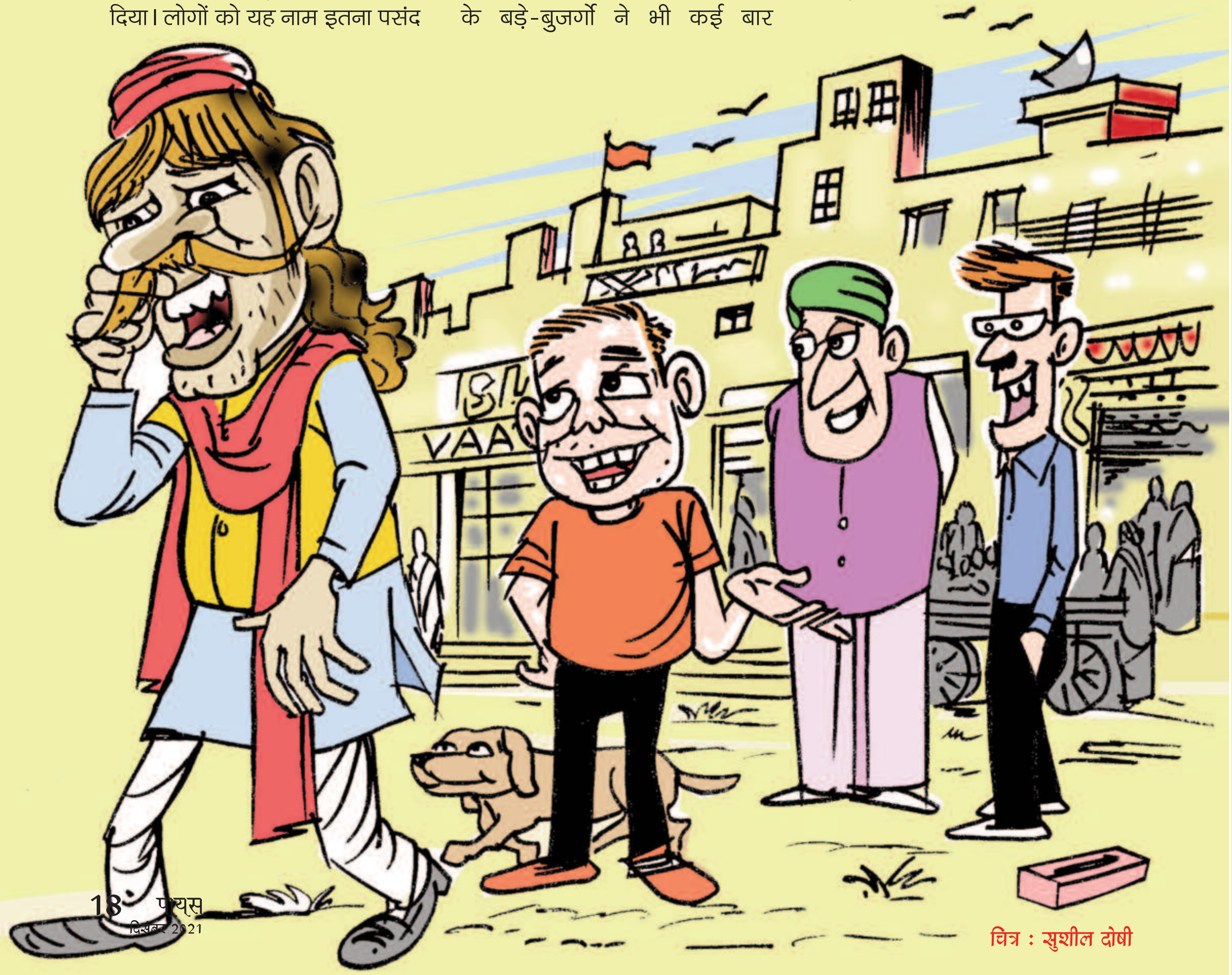

चित्र : सुशील दोषी

पक्की मूर्खता थी। जब हर महीने बाल कटवाकर फेंकने ही हैं, तो उन्हें बढ़ाने के लिए तेल और शेम्पू पर पैसा बर्बाद करने की क्या जरूरत? जुकामी चाचा का दावा था कि युगों-युगों से चली आ रही इस मूर्खता पर अब तक जितना पैसा बर्बाद हो चुका है, उतने में देश की अर्थव्यवस्था सुधर सकती थी।

जुकामी चाचा का रिकॉर्ड था कि बाल कटवाने के लिए उन्होंने आज तक एक चवन्नी भी खर्च नहीं की थी। वह उन्हें बढ़ने देते। फिर मौके की तलाश में रहते। आसपास के मोहल्ले में जब भी कोई आदमी ऊपरवाले को प्यारा होता, वह झट से वहां मुंडन संस्कार करवाने पहुंच जाते। मातम-पुर्सी भी हो जाती और चार पैसे भी बच जाते।

एक बार कई महीनों तक आसपास के मोहल्लों में किसी की मौत नहीं हुई। इससे जुकामी चाचा के बाल और दाढ़ी झाड़ियों जैसे लंबे हो गए थे। उनमें पड़े जुओं ने खुजली मचा-मचाकर उनकी नाक में दम कर दिया था। बेचारे हर बीमार और बूढ़े को बड़ी हसरत से देखते, किंतु बुरा हो दिनो-दिन उन्नत हो रही मेडिकल साइंस का जिसके चलते कई गंभीर मरीजों की अंतिम यात्राएं रद्द हो गई थीं। वैसे कुछ मनचलों का मानना था कि यमदूत खुराफाती हो गए हैं। वे शरारतन जुकामी चाचा के मोहल्ले से किसी को विदा नहीं करा रहे हैं।

जुओं ने जुकामी चाचा के बालों में गदर काट रखी थी। खुजली के चलते बेचारे को न दिन में चैन मिलता था न रात में। लग रहा था कि पल्ले से खर्च कर मुंडन कराए बिना राहत न मिलेगी। अतः एक दिन मुट्ठी में 2 रुपए के सिक्के को थाम वह कल्लन नाई की दुकान की ओर चल पड़े। सोचा, पुरानी ब्लेड से मुंडन करवा लेंगे। मामला सस्ते में निबट जाएगा।

मगर किस्मत की मार कि उस दिन कल्लन कहीं बाहर गया हुआ था और उसका बेटा झुल्लन सैलून संभाले हुए था। उसने जुकामी चाचा को देखते ही फर्जी सलाम ठोंका, "अस्लाम, चचा मियां। सुबह-सुबह कहां चल दिए?"

"सलाम वालेकुम। बरखुर्दार। मैं कहीं जा नहीं रहा, बल्कि तुम्हारी ही दुकान पर आ रहा हूं।" जुकामी चाचा ने सलाम कबूल किया फिर अपनी सुराहीदार गर्दन को चक्करघिन्नी की तरह इधर-उधर घुमाते हुए बोले, "तुम्हारे वालिद साहब नजर नहीं आ रहे हैं?"

"वह बाहर गए हैं। अगर मेरे लायक कोई सेवा हो, तो हुक्म करें। बंदा हाजिर है।" झुल्लन ने कहा।

"बेटा, क्या तुम मेरा मुंडन कर दोगे?" जुकामी चाचा ने हिचकिचाते हुए वहां आने का मकसद बताया।

"आपने मेरी पाक दुकान पर अपने नापाक कदम..." झुल्लन ने आंखे मटकाईं।

"क्या कहा?" जुकामी चाचा की त्योरियां चढ़ गईं।

"माफ करना चचा, मेरा मतलब था कि मेरी नापाक दुकान पर आपने अपने पाक कदम रखकर जो इज्जत बख्शी है, उससे मेरा सिर फख्र से ऊंचा हो गया है।" झुल्लन ने मुंह में भरी पान की पीक को निगला, फिर किसी दरबारी की तरह झुकते हुए बोला, "जिस काम को करने का शबाब, मेरे बाप-दादा तक को नहीं मिला, वह आप मुझे दे रहे हैं। मैं खुशी-खुशी कलम करूंगा आपका सिर।"

"मेरा सिर?" जुकामी चाचा चिहुंककर पीछे हट गए।

"सिर नहीं, सिर के बाल।" झुल्लन मुंह पोंछते हुए बोला, "बुरा हो इस चमड़े की जुबान का, जो बार-बार फिसल जाती है। पर आप इत्मिनान रखिए। मैं ऐसा शानदार मुंडन करूंगा कि आप जिंदगी भर भूल न पाएंगे।"

"बेटा, पैसे कितने लोगे?" जुकामी चाचा ने धड़कते दिल से पूछा।

"आप घर के आदमी हैं। मुंडन करवाइए। बाद में वाजिब दाम लगा दूंगा।" झुल्लन बोला।

"भैया, हिसाब पहले से साफ रहे, तो ज्यादा अच्छा रहता है।" जुकामी चाचा ने अपना तर्जुबा बताया।

"ठीक है। आप 502 रुपए दे दीजिएगा।"

"502 रुपए किस बात के?" जुकामी चाचा यूं उछले, जैसे कहीं बम फट गया हो।

"दो रुपए मुंडन के और..." झुल्लन ने जान-बूझकर वाक्य अधूरा छोड़ दिया।

"बाकी 500 रुपए किस बात के?" जुकामी चाचा ने उसे घूरा।

"आपकी बहती हुई बदबूदार नाक देखकर जो ग्राहक भाग जाएंगे, 500 रुपए उसके हर्जाने के।" झुल्लन ने कीमत का खुलासा किया।

अपने लेखक को जानिए

संजीव जायसवाल 'संजय' : 40 वर्षों से साहित्य साधना में लीन। रेलवे की नौकरी से सेवानिवृत्ति के बाद पूरी तरह साहित्य को समर्पित। अब तक एक हजार से अधिक कहानियां और 25 से ज्यादा पुस्तकें प्रकाशित। इनकी एक पुस्तक का विश्व की 112 भाषाओं में अनुवाद हुआ।

"सत्यानाश हो, इस बदलते जमाने का। आज कल के लौंडो में तमीज नाम की कोई चीज ही नहीं बची है। न उम्र का ख्याल, न मोहल्ले की अदब।" जुकामी चाचा का पारा सीधे सातवें आसमान पर चढ़ गया। उन्होंने अपने हाथ झटक-झटक और लंबी गर्दन को उचका-उचकाकर झुल्लन को इतना कोसा कि कोसने का वर्ल्ड रिकार्ड भी टूट गया होगा।

कल्लन की दुकान के आसपास मुफ्त का तमाशा देखने वालों की अच्छी खासी भीड़ जमा हो गई थी। कुछ लोगों ने तो बकायदा जुकामी चाचा के एक्शन की वीडियो भी बना ली। थोड़ी देर बाद जब जुकामी चाचा बड़बड़ाते हुए घर लौट पड़े।

कल्लन की दुकान से थोड़ा आगे, जहां से गली घूमती है, वहीं चुन्नू पनवाड़ी की दुकान है। संयोगवश आज उसका बेटा मुन्नू वहां बैठा था। उसने जुकामी चाचा को उछलते-कूदते आते देखा, तो उसका दिल भी मचल उठा। उसने पान का बीड़ा उठाया और जुकामी चाचा की ओर बढ़ाते हुए बोला, "चचा, लगता है किसी ने सुबह-सुबह आपका दिल दुखा दिया है। मेरे लायक कोई सेवा हो तो बताइएगा।"

पान वह भी मुफ्त का! जुकामी चाचा ने लपककर उसे मुंह में दाबा फिर से पूरा किस्सा बताकर झुल्लन को कोसने लगे।

"यह तो खुल्लम-खुला डकैती का मामला है। अगर वह मुझसे इतने पैसे मांगता, तो मैं तो पुलिस में रिपोर्ट लिखा देता।" मुन्नू बोला।

"मैंने सोचा मोहल्ले का बच्चा है। पुलिस के चक्कर में फंसकर जेल जाएगा, इसलिए छोड़ दिया।" जुकामी चाचा ने दरियादिली दिखाई।

"खैर, जो हुआ सो हुआ। मैं सस्ते में आपके मुंडन का जुगाड़ करवा दूंगा।" मुन्नू ने सांत्वना दी, फिर पूछा, "पैसे कितने हैं आपके पास?"

"दो रुपए।" जुकामी चाचा ने मुट्ठी खोल, दो का सिक्का दिखाया।

"ये तो बहुत ज्यादा हैं।" मुन्नू ने दो का सिक्का लेकर अपने गल्ले में डाला फिर माचिस की एक डिब्बी और डेढ़ रुपए जुकामी चाचा के हाथ पर रखते हुए बोला, "इसे ले जाइए, आपका काम हो जाएगा।"

"ये क्या है?" जुकामी चाचा ने पलकें झपकाईं।

"डेढ़ रुपए से मिट्टी का तेल खरीदकर बालों में लगा लीजिए। फिर माचिस दिखा दीजिएगा, फटाफट सारे बाल साफ हो जाएंगे। उसके बाद वे दोबारा निकलेगें भी नहीं। हमेशा-हमेशा के लिए झंझट खत्म हो जाएगा।" मुन्नू ने पूर्ण गंभीरता के साथ मुंडन का आसान रास्ता समझाया।

जुकामी चाचा का गुस्सा सातवें आसमान के भी उस पार जा पहुंचा। दांत पीसते हुए वह मुन्नू की ओर लपके। वह उछलकर भागा। अब मुन्नू आगे-आगे और जुकामी चाचा पीछे-पीछे, मगर वह मुन्नू को छू तक नहीं पाए। आखिर में थक-हारकर वह घर लौट आए।

मुंडन भी नहीं हुआ और अठन्नी मुफ्त में चली गई। अब बचे हुए डेढ़ रुपए में मुंडन कैसे करवाया जाए? जुकामी चाचा काफी देर तक दिमागी घोड़े दौड़ाते रहे। अचानक एक जबरदस्त आइडिया दिमाग में आया तो वह खुशी से उछल पड़े।

जुकामी चाचा अपनी टांगो से सड़क नापते हुए अपने लक्ष्य की ओर चल दिए। पहला मोहल्ला, दूसरा मोहल्ला, तीसरा मोहल्ला और चौथा मोहल्ला पार करते हुए वह शहर के बाहरी हिस्से में बस रही एक नई कालोनी में पहुंच गए। वहां उन्हें कोई नहीं पहचानता था।

बस स्टैंड के पास बने पब्लिक टेलीफोन बूथ पर सन्नाटा पसरा हुआ था। जुकामी चाचा ने एक रुपए का सिक्का टेलीफोन में डालते हुए पुलिस चौकी का नंबर मिलाया, "एक खूंखार आतंकवादी साधुओं की तरह दाढ़ी और बाल बढ़ाए, नई कालोनी में टहल रहा है। उसे पकड़कर उसका मुंडन करवाइए, तो आप पहचान जाएंगे। उसकी फोटो कई बार टीवी पर दिखाई जा चुकी है।" कहकर जुकामी चाचा ने फोन काट दिया।

इसके बाद वह इत्मिनान से कालोनी में टहलने लगे। थोड़ी ही देर में पुलिस ने उन्हें घेर लिया। जुकामी चाचा ने भागने का नाटक किया। अपनी तोंद संभालते हुये दरोगा ने उन्हें दौड़ाया, तो वह खुद ही फिसलकर गिर पड़ा, लेकिन उसके सिपाहियों ने जुकामी चाचा को दबोच कर जीप में लाद ही लिया। दरोगा को काफी चोट आई थी, इसलिए वह रास्ते भर ताव खाता रहा।

पुलिस चौकी में एक नाई पहले से ही मौजूद था। दरोगा ने उसे जुकामी चाचा का मुंडन करने का आदेश दिया। शहर के सारे नाई जुकामी चाचा को पहचानते थे। उसने बताने की कोशिश की, "हुजूर, यह तो..."

"हम जानते हैं कि यह कौन है। तुम बस इसका मुंडन करो।" दर्द से कराहते हुए दरोगा ने नाई को डपटा।

नाई चुपचाप जुकामी चाचा का मुंडन करने लगा। सिर घुटने के बाद उनकी दाढ़ी-मूंछ भी साफ हो गई, पर कोई भी पुलिस वाला उन्हें पहचान न पाया।

"जल्दी बता कौन है तू?" दरोगाा ने गुस्से से पूछा।

"हुजूर, मैं तो जुकामी चाचा हूं।" उन्होंने इत्मिनान से बताया।

"अबे पुलिस से झूठ बोलता है। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि तू आतंकवादी है।" दरोगा फिर चीखा।

"हुजूर, यह कोई आतंकवादी नहीं,

वाकई में जुकामी चाचा ही हैं। लगता है, आप लोगों को कोई गलतफहमी हुई है।" नाई ने मुंह खोला।

"तुम इसे कैसे जानते हो?" दरोगा ने उसे घूरा।

"पूरा शहर जानता हैं कि आज तक बाल कटवाने के लिए इस महाकजूंस ने एक धेला भी खर्च नहीं किया है। यह सिर्फ किसी के मौत पर ही मुंडन करवाते हैं, मगर बहुत दिनों से इनके आस-पास के मोहल्लों से भी कोई आदमी उपर नहीं गया है इसीलिए इनकी दाढ़ी और बाल इतने बड़े हो गए थे।" नाई ने खुलासा किया। लगता है कि जुकामी चाचा ने आज भी मुफ्त में ही मुंडन करवाने का जुगाड़ किया था।"

बात दरोगा की समझ में आ गई। वह जुकामी चाचा की गर्दन दबोचकर चीख उठा, "पुलिस से मजाक करता है। जेल में सड़ा दूंगा तुम्हें।"

"हुजूर, वहां खाना तो मुफ्त का मिलेगा?" जुकामी चाचा ने अपनी आंखो को टिमटिमाते हुये पूछा।

दरोगा समझ गया कि ऐसे महाकंजूस से उलझना बेकार है। अतः जुकामी चाचा की गर्दन छोड़ उसे लात जमाते हुए दहाड़ा, "इसे गलत कॉल करके पुलिस को परेशान करने के लिए अच्छी तरह मरम्मत करके छोड़ दो। दोबारा ऐसा गलत काम किया या आसपास भी नजर आया, तो टांगे तोड़ दूंगा।"

जुकामी चाचा पिटकर सरपट भाग लिए। एक लात और पिटाई जरूर खानी पड़ी थी लेकिन मुंडन होने के साथ-साथ पैसे भी बच गए थे। अतः उनके लिए सौदा बुरा नहीं था।

मोहल्ले में पहुंचकर पिटाई को हटाकर उन्होंने नमक-मिर्च लगा कर इस किस्से का बयान किया, तो किसी भले आदमी ने इसको कहानी बनाकर एक पत्रिका में छपवा दिया।

जुकामी चाचा को जब पता लगा, तो उनकी छाती और चौड़ी हो गई। वह कई दिनों तक खुशी से झूमते रहे। पर मोहल्ले के भले आदमी शर्मसार होते रहे कि उनकी मूर्खता और कानून तोड़ने के चलते पूरे शहर में सारे मोहल्ले की बहुत बदनामी हो रही है। ✪

दुनिया दीवानी है इन पारंपरिक केकों की

अपने लेखक को जानिए

शिखर चंद जैन : तीन मोटिवेशनल पुस्तकों, एक बालकथा संग्रह,एक लघुकथा संग्रह के लेखक, बाल कहानियों, बालोपयोगी लेख, स्तंभकार, व्यक्तित्व विकास व मोटिवेशनल आर्टिकल्स के नियमित लेखक। बीते 33 वर्षों से राष्ट्रीय हिंदी दैनिकों व पत्रिकाओं में नियमित लेखन।

इन दिनों केक खूब खाए और खिलाए जा रहे हैं। मौका चाहे क्रिसमस का हो या न्यू ईयर पार्टी का हो, बर्थडे पार्टी का हो, एग्जाम में सफलता का, मम्मी-पापा की मैरीज एनिवर्सरी का, केक के बिना मजा कहां आता है। बाजार में भले ही एक से बढ़कर एक नई डिजाइन, स्टाइल और स्वाद वाले केक बिक रहे हों, लेकिन अब भी दुनिया भर में पारंपरिक केकों के प्रति लोगों की चाहत में जरा भी फर्क नहीं पड़ा है। हर देश के अपने पारंपरिक केक होते हैं, जिन्हें वहां के वाशिंदे बड़े चाव से खाते ह

जर्मनी : ब्लैक फॉरेस्ट चेरी केक

जर्मनी के दक्षिण पूर्वी हिस्से यानी ब्लैक फॉरेस्ट क्षेत्र में प्रचलित यह केक पूरी दुनिया में पसंद किया जाता है। भले ही कई लोग इस केक की उत्पत्ति स्विट्जरलैंड से मानते हैं फिर भी इसमें कोई दो राय नहीं है कि इसे परफेक्शन और पॉपुलरिटी जर्मनी ने ही दी है। चॉकलेट केक की लेयर्स के बीच चेरी और टॉपिंग में व्हिप्ड क्रीम, चॉकलेट शेविंग्स और चेरी इस केक की खासियत है।

इटली : पैनेटोन केक

पैनेटोन एक प्रकार की नरम और मीठी ब्रेड है। भले ही यह दिखने में ब्रेड हो, लेकिन इटली वासी इसे डेजर्ट केक ही मानते हैं और क्रिसमस के साथ-साथ न्यू ईयर के मौके पर भी इसे खाना खूब पसंद करते हैं। पैनेटोन में कई तरह की फ्रूट कैंडी, किशमिश आदि भरी होती है। इसे यहां के लोकप्रिय पेय अमेरेट्टो या हॉट चॉकलेट के साथ सर्व किया जाता है।

भारत : मावा केक

दूध से बना मावा केक आपको भारत के लगभग सभी राज्यों में मिठाई की दुकानों में आसानी से मिल जाएगा। दूध में इलायची, तरह-तरह के मेवे आदि मिलाकर बनाया गया मावा केक भारतीयों को खूब पसंद है।

खासतौर पर भगवान का जन्मदिन मनाना हो या बड़े-बूढ़ों को केक खिलाना हो, तो मावा केक को ही प्राथमिकता दी जाती है। मुंबई, राजस्थान और यूपी में यह विशेषतौर पर लोकप्रिय है।

तुर्की/ ग्रीसः रेवानी केक

अरब देशों विशेष कर तुर्की में ड्राईफ्रूट्स, परतदार पेस्ट्री और शहद से बने डेजर्ट्स खूब पसंद किये जाते हैं। यहां का रेवानी केक भी खूब लोकप्रिय है। इसे सूजी से बनाया जाता है जिसमें नींबू और संतरे का रस भी मिलाया जाता है। सूजी से बना यह केक ग्रीस और तुर्की के नागरिकों में समान रुप से पसंद किया जाता है। यहां केक में भी ड्राइफ्रूट और शहद डालकर तरह-तरह के प्रयोग किए जाते हैं।

न्यूज़ीलैंड और ऑस्ट्रेलिया : पावलोवा केक

रुस की प्रसिद्ध बैले डांसर अन्ना पावलोवा के नाम पर बनाया गया पावलोवा केक न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया वासियों के बीच अक्सर विवाद का विषय बन जाता है। दोनों ही देश इसे अपनी अपनी उत्पत्ति बताते हैं। यह केक दोनों देशों में समान रुप से लोकप्रिय है। किवी, स्ट्रॉबेरी एवं अन्य तरह-तरह के फलों से सजाया गया यह केक कॉर्नफ्लोर और स्थानीय आइटम मेरिंग्यू को मिलाकर बनाया जाता है।

ज़ापानः मोची केक

जापान के लोग चावल के पेस्ट से बने इस केक को खूब पसंद करते हैं। खासतौर पर न्यू ईयर पार्टी तो इस केक के बिना अधूरी मानी जाती है। यहां मोची केक के पचासों वर्जन आपको पूरे साल खाने को मिल जाएंगे। यहां के शैफ और गृहणियां चावल के पेस्ट में तरह-तरह की सामग्रियां मिलाकर नित नए स्वाद विकसित करती रहती हैं।

स्कॉटलैंडः डंडी केक

स्कॉटलैंड का पारंपरिक डंडी केक और इसके कद्रदान आपको दुनिया के लगभग सभी बड़े देशों में मिल जाएंगे। खजूर और किशमिश से बना यह फ्रूट केक किसी को भी पसंद आ जाता है। स्वाद में परिवर्तन के लिए लोग इसमें तरह-तरह की चेरी भी डाल देते हैं। स्कॉटलैंड के लोग इसे अपने रंग में रंगने के लिए इसमें कभी-कभी व्हिस्की भी मिला देते हैं। इसे बादाम की टॉपिंग से सजा दिया जाए, तो स्वाद और भी बढ़ जाता है।

सफेद चूहा

सोनू एक दिन स्कूल से घर जा रहा था। अचानक उसने देखा कि सड़क के किनारे एक बेंच पर एक आदमी सो रहा है। उसके पास एक सुंदर सा पिंजरा था। उसमें सफेद रंग का एक चूहा था। वह बाहर निकलने की भरपूर कोशिश कर रहा था। सोनू को उस पर दया आ गई। वह पिंजरे के पास आया और

चित्र : नीतू खोहवाल

इधर-उधर देखने लगा। वह आदमी खर्राटें ले रहा था। सोनू समझ गया कि यह आदमी इस चूहे को बेचने के लिए शहर लाया होगा।

उसने चुपचाप पिंजरे का दरवाजा खोल दिया। चूहा तुरंत बाहर की तरफ दौड़ा। लेकिन वह इधर-उधर भागने की बजाय सोनू के बस्ते में ही घुस गया। वहां चूहे को बस्ते से बाहर निकालना उसके लिए मुश्किल था। उसे डर था कि कहीं पिंजरे वाला आदमी उसे देख न ले। इसलिए वह तुरंत अपने घर की ओर रवाना हो गया।

सफेद चूहा बस्ते में उछल रहा था। सोनू ने घर पहुंचते ही अपने बस्ते को झाड़ना शुरू किया। "अरे सोनू ये क्या कर रहे हो...स्कूल आते ही..क्या कुछ गुम हो गया ?" मम्मी ने पूछा।

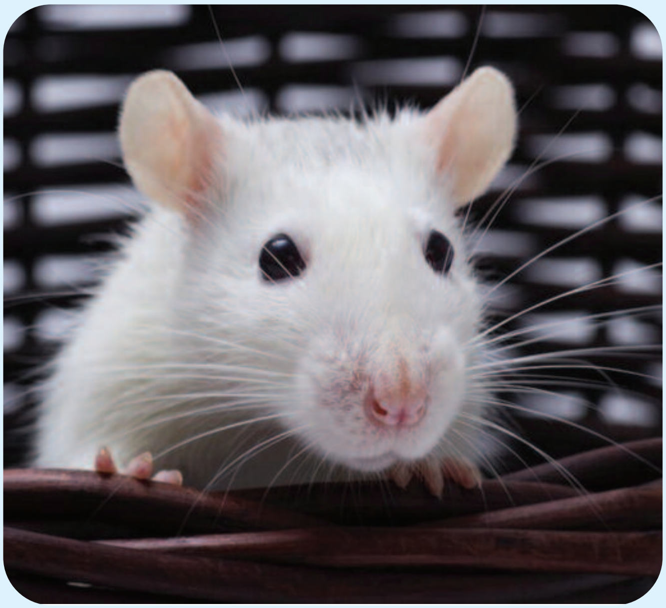

"अरे मम्मी, पूछो मत..., घर पहुंचकर जान में जान आई है। मैं बड़ी मुसीबत में फंस जाता आज तो।" सोनू ने हांफते हुए कहा।

मम्मी ने घबराते हुए पूछा, "कैसी मुसीबत बेटा ?"

सोनू ने मम्मी के पूछने पर चूहे को पिंजरे से बाहर निकालने वाली सारी घटना बता दी।

उसकी मम्मी ने कहा, "बेटा चूहे को पिंजरे से आजाद करके काम तो तुमने पुण्य का किया है। लेकिन वह आदमी देख लेता, तो सचमुच में मुसीबत में पड़ जाता तू।"

उसी समय चूहा उछलकर उसके स्वेटर पर चढ़ गया। उसकी इस हरकत से सोनू चिल्लाया।

अब चूहा भी सहम गया। सोनू उसे झटकने लगा, तो वह स्वेटर पर लटक गया। उसकी मम्मी ने उसे तसल्ली देते हुए कहा, "बेटा, घबराओ मत, यह अभी भी डरा हुआ है। बाद में इसे बाहर छोड़ आना।"

"बाहर तो इसे कुत्ते-बिल्ली खा जाएंगे। वहां तो इसकी जान को खतरा है।" सोनू ने कहा।

"तुम सही कह रहे हो। चलो, अभी कमरे में ही रहने दो, बाद में कुछ सोचेंगे।" मम्मी ने समझाया।

शाम को जब उसके पापा घर आए, तो उसने बेझिझक सारी बातें पापा को बता दीं। सफेद चूहा सोनू के पलंग के नीचे दुबककर बैठा था। चूहे का सफेद रंग देखकर उसके पापा ने कहा, "अरे, यह तो बहुत सुंदर चूहा है। इसे बाहर निकालो और कुछ खाने-पीने को दो। अगर ये घर से बाहर नहीं जाना चाहता, तो इसे घर में ही रहने दो, वरना कोई इसे फिर उठा ले जाएगा। इसके सहारे तुम्हारा मन बहल जाएगा। हां, तुम्हें पता है कि ऐसे सफेद चूहे कहां पाए जाते हैं ?"

"नहीं पापा।" सोनू ने जवाब दिया।

उसके पापा ने बताया, "राजस्थान के बीकानेर जिले में एक स्थान है, देशनोंक। वहां करनी माता का प्राचीन मंदिर है। उस मंदिर में चूहे ही चूहे हैं।"

"लेकिन वहां तो साधारण चूहे हैं...। सफेद चूहे थोड़े हैं।" मम्मी ने सोनू के पापा को टोकते हुए जवाब दिया।

इस पर पापा बोले, "तुम ठीक कह रही हो। लेकिन उस मंदिर में कुछ सफेद चूहे भी हैं। ऐसी मान्यता है कि किसी भाग्यशाली व्यक्ति को ही सफेद चूहे के दर्शन होते हैं।"

"इसका मतलब हम भी बड़े भाग्यशाली हैं, जो सफेद चूहे ने हमें दर्शन दे दिए।" सोनू ने हंसते हुए कहा।

इस पर उसकी मम्मी बोलीं, "दर्शन ही नहीं दिए बल्कि हमारे घर में भी आ गए। सफेद चूहे जी महाराज की जय हो।"

उनकी बात सुन सब ठहाके मारकर हंसने लगे। ✪

अपने लेखक को जानिए

गोविन्द भारद्वाज : बाल साहित्य रचनाकार और प्रधानाचार्य। आठ पुस्तकें प्रकाशित (छह कहानी संग्रह और दो बाल कविता संग्रह)। राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर द्वारा पुरस्कृत। तीस से अधिक सम्मान व पुरस्कार प्राप्त। देश के प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं में निरंतर रचनाओं का प्रकाशन।आकाशवाणी व दूरदर्शन पर कार्यक्रमों का प्रसारण।

मोनू का संकल्प

मोनू बेसब्री से अपने पापा का इंतजार कर रहा था। पापा ने वादा किया था कि वे बाजार में घूमने जाएंगे। मोनू को क्रिसमस के दिनों में घूमने जाना बहुत अच्छा लगता था

पापा के आते ही मोनू बोला, "पापा, मैं और मम्मी तैयार हैं।"

मोनू का उतावलापन देखकर पापा मुसकराते हुए बोले, "मैं खाना खा खा लेता हूं, फिर हम चलते हैं।"

कुछ देर में मोनू, मम्मी-पापा के साथ रवाना हो चुका था। मोनू को बाजार की रौनक बहुत अच्छी लग रही थी। बहुत सारी दुकानों पर सांता क्लॉज सजे हुए थे। तभी मम्मी ने पापा से एक बड़ी दुकान पर रुकने के लिए कहा ।

मोनू आश्चर्य से वहां रखे हुए सामानों को देख रहा था। दुकान वाले अंकल बहुत छोटे-छोटे सामानों की कीमत भी बहुत ऊंची बता रहे थे । उसने धीरे से मम्मी से पूछा, "मम्मी! छोटे-छोटे सामान की इतनी ज्यादा कीमत क्यों है ?"

मम्मी ने उसे समझाया, "ये बहुत दुर्लभ धातु के बने हैं। इन्हें बनाने में समय भी अधिक लगता है, तो मजदूरी भी बहुत ज्यादा होती है...इसलिए कीमत बढ़ जाती है।"

मोनू को मम्मी की बात समझ में आ गई थी। तभी उसकी नजर एक नन्हे सांता क्लॉज पर पड़ी। न जाने क्या सोचकर उसने सबकी नजर बचाकर उसे उठाकर अपनी जेब में रख लिया ।

कुछ देर बाद वे गाड़ी में आकर बैठ गए थे। पापा उससे बातें करते हुए गाड़ी चला रहे थे, लेकिन अब मोनू का ध्यान किसी बात में नहीं लग रहा था । वह तो घर जाकर उस नन्हे सांता क्लॉज से खेलना चाहता था, पर न जाने क्यों, सांता क्लॉज को पाकर भी उसे ज्यादा खुशी नहीं हो रही थी।

घर आकर भी उसे उदास देखकर मम्मी ने उससे पूछा कि वह उदास क्यों हैं लेकिन मोनू उन्हें नहीं बता पाया। वह यह सोचकर बेचैन हो रहा था कि उसने जो किया, बिल्कुल गलत किया। यदि सीसीटीवी कैमरे में उसकी हरकत रिकॉर्ड हो गई होगी, तो दुकानदार अंकल कहीं घर पर पुलिस लेकर न आ जाएं। मम्मी-पापा को उसकी वजह से कितनी शर्मिंदगी उठानी पड़ेगी, यह सोचकर उसकी नींद ही उड़ गई थी।

आखिर उसने आधी रात को पापा को जगाया और एक सांस में उन्हें सारी बात बता दी ।

पापा ने कहा, "तुमने गलती तो की है, पर उसे स्वीकार करके उसे सुधार भी लिया। कल हम यह सांता क्लॉज दुकानदार अंकल को वापस दे आएंगें या खरीद लेंगे।"

अब मोनू की जान में जान आई थी और वह सो गया था ।

अगले दिन मोनू पापा के साथ उसी दुकान पर जाकर वह सांता क्लॉज लौटा आया था, जो उसने वहां से चुराया था।

दुकानदार अंकल ने यह कहकर सांता क्लॉज मोनू को दे देना चाहा कि अपनी गलती मान लेना बहुत बड़ी बात होती है। पर पापा नहीं माने। उन्होंने उसके दाम चुकाए।

अंकल को धन्यवाद कहकर मोनू पापा के साथ घर लौट आया था। उसने यह संकल्प ले लिया था कि वह कभी भी चोरी नहीं करेगा।

रचनाकार को जानिए

डॉ. अलका जैन 'आराधना' : विभिन्न राष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में तीन सौ से अधिक बाल कहानियां प्रकाशित, एक काव्य- संग्रह एवं दो साझा संग्रह प्रकाशित, एक साझा संग्रह का संपादन, मानव संसाधन विकास मंत्रालय की भारतीय समाज विज्ञान परिषद द्वारा 'पोस्ट डॉक्टरल फ़ेलोशिप' के लिए चयन। संप्रति : स्वतंत्र लेखन।

दावत के मारे, ये सब बेचारे

ख़ुद की खातिर देखी ककड़ी,
"कैसे खाऊँ ?" बोली मकड़ी!

फूल गया नन्हा-सा चूज़ा,
खाकर ख़ूब बड़ा खरबूज़ा!

लाल मुँहा जब आया बंदर,
उसने पाया लाल चुकंदर!

आया जब फुर्तीला चीता,
उसको पकता मिला पपीता!

जीरा कहाँ ढूँढता ऊँट,
मिली यहाँ पर उसको फूट!

व्रत रखकर आई थी गाय,
उसे मिली बस मीठी चाय!

भुना हुआ जब देखा आलू,
ग़ुस्सा हो पिन्नाया भालू!

नन्हा हरा देख अंगूर,
भड़क गया काला लंगूर!

अपने लिए देखकर बेर,
वापस हुआ रूठकर शेर!

चित्र : सुशील दोषी

अपने लेखक को जानिए

रावेंद्रकुमार रवि : गणित शिक्षक। 1983 से निरंतर लेखन में सक्रिय। यूनिसेफ, एकलव्य व नेशनल बुक ट्रस्ट से पुस्तकें प्रकाशित। राष्ट्रपति द्वारा स्वर्णपदक प्राप्त। हरिकृष्ण देवसरे बालसाहित्य पुरस्कार से सम्मानित। मासिक 'बालसाहित्य की धरती' का संपादन।

आदिवासी नृत्य महोत्सव

उमंग और मस्ती का पर्व

सुमन बाजपेयी

उत्तराखंड का झींझींहन्ना नृत्य हो, तेलंगाना का गुसाड़ी-डिम्सा नृत्य, झारखंड का उरांव, गुजरात के सिद्धि गोमा नृत्य, या मध्यप्रदेश का करमा नृत्य, झारखण्ड का कड़सा, जम्मू-कश्मीर का गोजरी, आंध्रप्रदेश का गुरयाबल्लुहो या ओडिशा का धप नृत्य, नाम लेते जाएं लेकिन नृत्यों की सूची खत्म नहीं होगी।

सुर और ताल का एक खूबसूरत समां तो बनेगा ही, अगर एक ही जगह 27 राज्यों तथा छह केंद्र शासित प्रदेशों के 59 आदिवासी नर्तक दल और श्रीलंका, उज्बेकिस्तान, किंगडम ऑफ़ एस्वातीनी, नाइजीरिया, माली और युगांडा के नर्तक दल एकत्र हों और अपनी-अपनी प्रस्तुति दें।

मौका था छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर में 28 से 30 अक्तूबर 2021 को हुए राष्ट्रीय आदिवासी नृत्य महोत्सव का। महोत्सव के दूसरे संस्करण में दूर-दूर से लोग आदिवासी जीवन और संस्कृति की झलक पाने को एकत्र हुए। जो आया, वही नर्तकों के साथ झूमने को उत्सुक दिखा।

शानदार रहीं प्रस्तुतियां

आदिवासी समाज अपनी सभ्यता, संस्कृति और परंपरा को बचाने में संघर्ष कर रहे हैं। ऐसे में इस उत्सव ने आदिवासी वर्ग को एक ऊर्जा दी जिससे निस्संदेह उन्हें अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को बचाए रखने में मदद मिल सकेगी। साथ ही यह उत्सव था उनकी अद्भुत आंतरिक क्षमता, कला और शिल्प का। ऐसा लग रहा था, मानो गीत-संगीत, नृत्य, वाद्य और वादन के जरिए एक नया समाज आकार ले रहा है।

इस अवसर पर बस्तर के सुकमा, बीजापुर और दंतेवाड़ा के लोक नर्तकों ने छत्तीसगढ़ के समृद्ध, सांस्कृतिक वैभव की अनोखी झलक प्रस्तुत की। इन कलाकारों ने मुख्य मंच के अलावा प्रांगण में अपनी लोक शैली की अभिनव प्रस्तुति से दर्शकों का मनोरंजन किया।

केरल के कलाकारों ने दक्षिण भारत में पनिया जनजाति के युवक-युवतियों द्वारा शादी-ब्याह में किए जाने वाले वट्टाकली नृत्य का प्रदर्शन किया। इसी तरह महाराष्ट्र के लोक दल ने उमंग और उत्साह के साथ विवाह के अवसर पर किए जाने वाले गारलीसुसून नृत्य किया। सिक्किम के तमांग जनजाति द्वारा किए जाने वाले ऊर्जा और शक्ति की भरमार लिए तमांगसेला नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी। हाथ में ढपली लिए और नीले रंग के कपड़ों में सजे सिर पर टोपी लगाए कलाकारों ने अपनी अलग और अनूठी छाप छोड़ी। विभिन्न तरह की पारंपरिक पोशाकें, आभूषण और सज्जा की वस्तुएं नृत्य को और आकर्षण प्रदान कर रही थीं।

बस्तर के लोक कलाकारों ने अपनी परंपरागत लोक नृत्य शैली से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। पश्चिम बंगाल के संथाली समुदाय के नर्तक दल द्वारा प्रस्तुत संथाली लोकनृत्य ने दर्शकों का मन मोह लिया। रंग-बिरंगे आकर्षक परिधान धारण किए हुए नर्तक दल की सधे हुए लयबद्ध नृत्य को दर्शकों ने खूब सराहा। साड़ी की धोती और माथे पर साड़ी की पगड़ी पहनकर संथाली जब समवेत स्वर में थिरके, तो लोगों का मन मोह लिया। निकोबारी लोक नृत्य, जो अंडमान एवं निकोबार का सबसे प्राचीनतम परंपरागत नृत्य है, ने मंच पर एक अचंभित करने वाला माहौल पैदा कर दिया। महिला व पुरुष नर्तक दलों द्वारा यह नृत्य पूर्णिमा के अवसर पर किया जाता है। नृत्य प्रस्तुत करने वाले कलाकार नारियल की पत्तियों को धारण कर, परस्पर एक-दूसरे के कंधों पर हाथ रखकर, एक ही समय पर थाप देते हुए नृत्य कर रहे थे।

केंद्र शासित प्रदेश लद्दाख के कलाकारों ने तिब्बती नववर्ष पर किए जाने वाले जबरो नृत्य की प्रस्तुति दी। नृत्य में जोश एवं भाव-भंगिमा का विशेष आकर्षण लिए इस नृत्य में पदताल की अधिकता होती है। लाल-पीले रंग-बिरंगे पोशाक से सजे-धजे कलाकारों ने नृत्य के माध्यम से बताया कि ऊंचे पहाड़ों पर कठिन परिस्थितियों में जीवन-यापन करने वाले लोग कैसे गीत-संगीत से कैसे खुशनुमा माहौल बना लेते हैं। इसी तरह असम के कलाकारों ने बोडो जनजाति द्वारा किया जाना वाला बार दोई शीतला और बीहू नृत्य का प्रदर्शन किया। असमिया गीतों की मधुर धुन के बीच कलाकारों ने चटक रंगों के परिधानों में भाव-भंगिमा की अद्भुत प्रस्तुति दी।

दो वर्गों में हुई प्रतियोगिता

महोत्सव में विवाह संस्कार, पारंपरिक त्योहार, अनुष्ठान, फसल कटाई, कृषि एवं अन्य पारंपरिक विधाओं पर नृत्य प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। झारखण्ड की ओर से विवाह संस्कार की विधा के तहत कड़सा, फसल कटाई के तहत उरांव एवं छऊ नृत्य की प्रस्तुति आदिवासी समुदाय के कलाकारों ने की। नर्तक दलों को कुल 20 लाख रुपए की पुरस्कार राशि, प्रमाण पत्र

और ट्रॉफी प्रदान की जाने की घोषणा की गई। प्रत्येक विधा में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले दल को पांच लाख रुपए, द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले दल को तीन लाख रुपए तथा तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले दल को दो लाख रुपए की पुरस्कार राशि से सम्मानित किया गया। झारखंड टीम ने विवाह संस्कार और पारंपरिक नृत्य दोनों में 10 लाख रुपए का पुरस्कार जीता। ओडिशा की टीम दोनों वर्गों में रनर-अप रही, जबकि असम की टीम ने विवाह संस्कार वर्ग में तीसरा और छत्तीसगढ़ की टीम ने पारंपरिक वर्ग में तीसरा स्थान प्राप्त किया।

व्यंजन और शिल्प की रही धूम

एक तरफ नृत्य दर्शकों को लुभा रहे थे, तो दूसरी ओर साइंस कालेज मैदान में सजे विभिन्न व्यंजनों के स्टॉल, हस्तशिल्प के स्टॉल, सरकारी योजनाओं वाले स्टॉल के माध्यम से लोगों ने राज्य की विशेषताएं जानी। जनसंपर्क विभाग ने महोत्सव स्थल पर फोटो प्रदर्शनी लगाई थी। इसमें छत्तीसगढ़ पर्यटन, पारंपरिक वेशभूषा, आभूषण, वाद्य यंत्र को आकर्षक चित्र के माध्यम से प्रदर्शित किया गया था। साथ ही निर्माणाधीन श्रीराम वनगमन मार्ग को दर्शाया गया था।

विभिन्न राज्यों के व्यंजन और खास छत्तीसगढ़ी स्वाद का लोगों ने छककर आनंद उठाया। पारंपरिक वेशभूषा वाले कपड़े, कोसा की साड़ी और पीतल के गढ़े गए गहने लोगों के लिए कौतूहल का विषय बने रहे। आदिवासी कला को केंद्रित करने वाले स्टालों में सुंदर मुद्राओं, ढोल, बेल मैटल, और बांस के उत्पाद, पीतल की बनी प्रतिमाएं, मिट्टी के बर्तन और दीये, आकर्षण का विषय बने रहे। इस उत्सवी माहौल में जहां एक ओर नृत्य व आदिवासियों से बातचीत करने का लुत्फ उठा रहे थे, वहीं दूसरी ओर जमकर खरीदारी भी कर रहे थे।

यह रहती कहां है?

अपने लेखक को जानिए

शिवचरण सरोहा : दिल्ली प्रशासन में अध्यापक। विविध पत्र-पत्रिकाओं में बाल साहित्य, लघुकथाएं एवं कहानियां प्रकाशित। हिंदी अकादमी, दिल्ली एवं बाल साहित्य संस्थान, उत्तराखंड से पुरस्कृत।

कभी सुस्त सी पड़ी रहती है सागर पर। कभी मचलती हुई चढ़ जाती है पहाड़ पर। मैदान में दौड़ती है तो दौड़ती ही रहती है। गुस्सा चढ़ता है, तो पेड़ों के बाल पकड़कर उन्हें झकझोर देती है। और प्रचंड हो जाए, तो ऊंचे टावर को भी कपड़े के तरह निचोड़कर रख देती है। गाड़ियों को उलट देती है। झाड़ से कुश्ती करती है। और कभी प्यार से कंघी करती हुई खेतों से कहती है, "मैं हूं, तो तुम हो।"

बंधन में रहना इसे पसंद नहीं है पर कभी-कभी गुब्बारों में बंद होकर बच्चों के हाथों में आ धमकती है। बच्चों के साथ खूब धमाचौकड़ी करती है और फिर चुपके से आहिस्ता-आहिस्ता निकल भागती है, उन्हें छोड़कर। शरारत करते हुए अपने साथ उड़ा ले जाती है धूल, छोटी कंकड़, सूखे पत्ते। ठहरती ही नहीं, बस चलती ही जाती है। कभी तेज, कभी आहिस्ता। दिन-रात। जब कभी वह सुस्त पड़ती है, तो हमें बेचैनी होने लगती है। आंखें ढूंढ़ती हैं पर देख नहीं पातीं। बस महसूस ही होती है। चेहरे पर अपने आसपास। कभी इतनी ठंडी हो जाती है कि कपकपाहट चढ़ा दे। कभी गरम इतनी कि चीर देती है बदन को। और कभी-कभी तो सुहावनी होकर इतनी इठलाती है कि मन प्रसन्नता से उसी के साथ उड़कर झूमने लगता है।

यह बीमार न हो, इस बात ख्याल तो हमें रखना पड़ेगा वरना इसके साथ-साथ हम भी बीमार पड़ जाएंगे।

नीम, बरगद, पीपल, पलाश, जामुन और दूसरे सारे पेड़ सब के सब ढूंढ़ते रहते हैं इसे। बेचारे छोटे-छोटे पौधे तो उचक-उचककर इसे ढूंढ़ते है।

तो क्या ये कोई नटखट बच्ची है? जो शरारतें करती हुई उनके कंधों पर झूलती रहती है?

अगली बार जब वो मिले, तो उसका पता-ठिकाना पूछना कि यह रहती कहां है? ✪

चित्र : नीलू खोहवाल

बिन्नी की जीत

सात साल की बिन्नी अपने भाई-बहनों में सबसे बड़ी थी और पढ़ने में सबसे होशियार भी। पर खेलने में भी उसका कोई मुकाबला नहीं था। उसे बगीचे में कचनार के बीज इकट्ठे करना बेहद पसंद था। उसने अपने खिलौनों में गुड्डे-गुड़ियों और रसोई के बर्तनों के अलावा सुंदर और चमकीले सीप-शंखों का भंडार इकट्ठा कर रखा था। सारे बच्चे बिन्नी जीजी कहते हुए उसके आगे पीछे फिरते थे।

लेकिन बिन्नी खुश नहीं थी क्योंकि उसका छोटा भाई रामेंद्र यानी रमलू उसके साथ नहीं, बल्कि विपक्षी की तरह उसका विरोधी था।

बिन्नी से लगभग दो साल छोटा रमलू दुबला-पतला और बड़ा ही जिद्दी लड़का था। जरा सी बात पर रूठना और तुनकना उसकी आदत थी। वह रोता भी बहुत था इसलिए, अक्सर उसकी नाक बहती थी, जिसे वह ऊपर ही सुड़कता रहता था।

बिन्नी से उसका बैर बिल्ली और चूहे जैसा था। और दोनों की लड़ाई में चूहा बिल्ली पर हमेशा ही भारी रहता था। हर बार, हर बात में। चाहे खाने-पीने की चीजों का बंटवारा हो, या धक्का-मुक्की और मारपीट का। बिन्नी हमेशा पीछे रह जाती थी। जैसे कि मां उनके लिए खीर या सत्तू देती, तब रमलू सबसे बड़ा कटोरा लाकर मां के सामने रख देता।

"इसे पूरा भरो।" रमलू अड़ जाता।

"इतना खा तो पाएगा नहीं बेटा। और जीजी भी तो है न?" मां कहतीं, पर रमलू कहां मानता। इसी तरह पिताजी आम काटते, तो रमलू पहले ही कह देता, "गुठली वाला हिस्सा मैं लूंगा।"

बिन्नी भी वही हिस्सा लेना चाहती थी। मां समझातीं, "बिन्नी, रमलू को ही लेने दे। वह बेवकूफ है। इतना भी नहीं जानता कि गुठली वाला हिस्सा खट्टा होता है और गूदा भी जितना दिखता है, उतना होता नहीं है।"

बात भी यही सही है। पर बुरा यह लगता था उसे कि जिद हमेशा रमलू की ही पूरी होती थी। मां नानी के घर जातीं या बाबूजी बाजार जाते, तो रमलू ही तैयार होकर आगे-आगे चल पड़ता। बिन्नी को हर जगह मन मारकर पीछे हटना पड़ता था।

बिन्नी के पीछे रहने का मतलब यह नहीं था कि उनमें झगड़ा होता ही नहीं था। रमलू पक्का लड़ाकू था। लड़ाई का कोई बहाना नहीं मिलता

तो वह बहाने भी तैयार कर लेता था। जैसे बिन्नी कहीं बैठकर अपना सबक याद करती, तो रमलू उसी जगह जाकर जोर-जोर से पढ़ता, "अ से अनार, क से ककड़ी, ब से बिन्नी।"

"तू कहीं और जाकर पढ़ ना। मेरे कान पर ही क्यों चिल्ला रहा है?"

"मैं तो यहीं बैठूंगा।"

"मैं यहां पहले से ही बैठी हूं। इसलिए जगह मेरी है।"

"क्यों, क्या यहां तेरा नाम लिखा है?"

रमलू बड़ी बहन से तू कहकर बात करने लगता। ऐसा नहीं था कि बिन्नी उसे सबक नहीं सिखा सकती थी। कभी-कभी ज्यादा गुस्सा आ जाता, तो जमकर उसकी धुनाई कर भी देती, लेकिन रमलू पिटकर भी बराबर भिड़ने तैयार रहता था। और फिर वह बड़ी सी धमकी भी दे डालता था, "अब मुझसे कहलवा लेना जीजी और बांध लेना मुझे राखी।"

तब बिन्नी को लगता कि वह जीत कर भी हार गई है। रमलू उसका छोटा भाई है। जब वह चलना सीख गया था, तब भी कभी-कभी रास्ते में बैठ जाता था ताकि जीजी उसे गोद में ले ले। तब जीजी हुलसकर भाई को गोद में उठाकर कमर पर टिका लेती थी। चाहे खुद एक तरफ तराजू के भारी पलड़े की तरह झुक जाती थी। अब भी चाहती थी कि रमलू उसे माने, प्यार से जीजी कहे पर उसकी समझ में नहीं आता कि अपने छोटे जिद्दी भाई को कैसे समझाए।

बिन्नी के घर के पिछवाड़े एक बेर का पेड़ था जो आजकल सुनहरे लाल और मीठी खुशबू वाले फलों से लदा-फदा था। फलों के बोझ से इतनी टहनियां झुक गई थीं कि हाथ बढ़ाकर बेर तोड़ लो।

उस समय बिन्नी बेर तोड़ रही थी। पर बिन्नी कोई काम करे और रमलू न करे, यह तो हो नहीं सकता। बस रमलू पेड़ की ओर छोटे-छोटे पत्थर फेंकने लगा।

"रामेंद्र, पत्थर किसी को लग जाएगा।" बिन्नी ने समझाया पर वह अकड़कर बोला, "जिसको डर लग रहा हो, वह यहां से भाग जाए।"

वह पत्थर के टुकड़े फेंकता रहा। तभी एक बड़ा सा टुकड़ा बिन्नी के माथे से टकराया। वह उईई... कहती हुई जमीन पर बैठ गई। हथेली से दबाने के बाद भी माथे पर गूलर जैसा गूमड़ उभर आया। खून भी चिमचिमा रहा था। रमलू की सिट्टी-पिट्टी गुम। आज बिन्नी नही छोड़ेगी। और बिन्नी कुछ न भी कहे, पर पिताजी जरूर हड्डी-पसली एक कर देंगे। बिन्नी उनकी लाड़ली बेटी है। फिर चोट देखकर तो मां भी उसकी खूब खिचाई करेंगी।

रमलू सोच ही रहा था कि मां हाथ में हरी संटी लेकर तमतमाती हुई आईं। किसी ने वह बात मां तक पहुंचा दी थी। वैसे भी बिन्नी और रमलू की लड़ाइयों से आसपास सभी परिचित थे।

"आज तेरी सारी अकड़ निकाल देती हूं। नाक में दम कर दिया है।" इस वाक्य के साथ ही मां ने संटी हवा में लहराई।

रमलू बिलबिला उठा। उसे इस तरह बिलबिलाते देख बिन्नी का कलेजा मुंह की तरफ आने लगा। उसने उठकर मां का हाथ पकड़ लिया, "उसे क्यों मारती हो मां?"

"आज इसकी तरफदारी मत करना बिन्नी। बहुत सिर चढ़ गया है। जब देखो, इसकी कोई न कोई शिकायत मिलती रहती है।"

मां ने फिर संटी उठाई पर बिन्नी ने रोकते हुए कहा, "लेकिन अभी उसकी गलती नहीं है। वह तो मेरी ही फेंकी लकड़ी लौटकर मेरे माथे से टकरा गई थी सच्ची। अपनी कसम।"

"तेरी इस बात पर मुझे जरा भी यकीन नहीं होता।"

"यकीन कर लो मां। मत मारो, छोड़ दो उसे।" यह कहते-कहते बिन्नी रोंआसी हो गई।

"तेरे कहने से छोड़ रही हूं, पर कल मत कहना कि..।" कहती हुई संटी फेंककर मां चली गईं।

बिन्नी ने रमलू को देखा, वह अभी सुबक रहा था लेकिन उसकी आंखों में अपराध-बोध के साथ बिन्नी के लिए स्नेह और कृतज्ञता का भाव साफ दिखाई दे रहा था। वह जरा से संकेत पर आकर उससे लिपट जाने को तैयार लगता था। बिन्नी ने उसे पास बुलाया, तो वह सचमुच जीजी से लिपटकर रोने लगा।

बिन्नी को विश्वास हो गया कि उसने अपने छोटे भाई पर मनचाही जीत हासिल कर ली है। और इस बार उसका विश्वास सही था। ✪

अपने लेखक को जानिए

गिरिजा कुलश्रेष्ठ : व्याख्याता (हिन्दी), कविता, गीत, कहानियां, लघु-कथाएं, बाल-कहानियां, कविताएं, लघुनाटिकाएं विभिन्न समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन। छोटी-बड़ी दस पुस्तकें प्रकाशित। दो बाल कहानियां चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट से पुरस्कृत

10 दिसंबर :
इंटरनेशनल माउंटेन डे पर विशेष

पर्वत की भी सुनो

पहाड़ हमेशा से लोगों को लुभाते रहे हैं। कभी पर्यटन के नाम पर, तो कभी उसकी ऊंची चोटियों को फतह करने के नाम पर इनसान वहां जाता रहता है। उसे धरती के भूतल पर जब गरमी लगी, तो उसने पहाड़ों के सीने या चोटियों को काट-काटकर वहां गांव और शहर बसाए।

पहाड़ों का इनसान की जिंदगी में बड़ा महत्त्व है। इनसान को जो पीने का पानी मिलता है उसका आधा भाग पहाड़ ही तो देता है। विश्व पर्यटन का बीस प्रतिशत भाग पहाड़ों का ही है।

आज अगर पहाड़ और उसके पास भंडारित जल ना हो, तो इनसान का जीवन खतरे में पड़ जाए। इनसान की जिंदगी में जरूरी खाने और पीने के सामान से लेकर प्राकृतिक सुंदरता का भंडार पहाड़ के पास है।

इसी पहाड़ के प्रति लोगों के मन में प्यार और आदर जगाने के लिए संयुक्त राष्ट्र में 11 दिसंबर को माउंटेनियरिंग डे अर्थात पर्वतारोहण दिवस घोषित किया है। विश्व की आबादी के 15 प्रतिशत लोग पहाड़ों पर ही रहते हैं और बायोडायवर्सिटी का आधा हिस्सा पहाड़ों पर ही है

परंतु आज वातावरण में आ रहे बदलाव और इसका अत्याधिक दोहन के कारण पहाड़ खतरे में हैं और पहाड़ के खतरे में पड़ने का मतलब मनुष्यता खतरे में है।

इस साल का थीम है स्थायी पर्वतीय पर्यटन। पहाड़ों पर पर्यटन की जरूरत है। पहाड़ पर रहने वाले लोग थोड़ी बहुत खेती-बाड़ी और पर्यटन से होने वाली कमाई पर ही अपना जीवन गुजारते हैं। इस पर भी कोरोना के कारण पिछले दो साल में वहां के लोगों की जिंदगी तबाह सी हो गई है। पहाड़ पर पर्यटन की स्थिति नाजुक है। ऐसी स्थिति में पहाड़ों को सुरक्षित रखते हुए वहां पर पर्यटन को बढ़ावा देना मुख्य थीम है।

लोगों को भी समझना चाहिए कि पहाड़ हैं, तो हम हैं। अतः हमें पहाड़ों का आनंद लेते समय पहाड़ों का भी ध्यान रखना चाहिए। आमतौर पर होता यह है कि पर्यटक पहाड़ों पर जाता है, तो खूब मस्ती करता है। घूमता है, फिरता है और वापसी में ढेरों कचरा वहां छोड़ आता है। और यह आम आदमी ही नहीं करते, एवरेस्ट जैसे दुर्लभ और महत्त्वपूर्ण जगह पर विजय पाने के लिए गए पर्वतारोही भी वहां पर इतना कचरा छोड़ आते हैं कि कई बार स्पेशल टीम भेजी गई और उन्होंने वहां से हजारों टन कूड़ा हटाया है।

इसलिए समय के हिसाब से इनसानों को चाहिए कि पहाड़ों का आनंद लेने के लिए पहाड़ को स्वच्छ भी रखना सीखें। पहाड़ स्वस्थ और साफ रहेंगे, तो पर्यटन बढ़ेगा, जो वहां के स्थानीय निवासियों के साथ देश की सरकार के लिए भी आमदनी का बढ़िया स्रोत बना रहेगा ✪

खाना मगर ध्यान से

अभी ठीक से सुबह का उजाला भी नहीं हुआ था। महेश ने जोर से पुकारा, “अरे रीता। सुनो तो।” तभी उसे अंदाजा हुआ कि अभी तो आसपास के लोग सो रहे होंगे।

महेश ने धीरे से रीता को आवाज लगाई, “अरे! कहां हो? इधर आओ। अखबार में सुहानी की फोटो छपी है। सुहानी टॉप थ्री की मेरिट में है। जगाओ उसे।”

सुहानी अधखुली आंखों के साथ सामने आ गई, “पापा। क्लासमेट्स व्हाट्सएप पर कल ही फोटो भेज चुके हैं। मैं फर्स्ट नहीं आई।”

रीता ने रसोई से ही झांका। कहा, “सुहानी। टॉप थ्री में आना भी बड़ी बात है। लेकिन उस पेंटिंग प्रतियोगिता में सैकड़ों बच्चों ने हिस्सा लिया था।”

महेश बोले, “और उनके बारे में सोचो, जो शामिल नहीं हो सके।”

चित्र : इंदिरा

रीता ने कहा, "अब ये बताओ कि तुम क्या खाओगी? मैं फटाफट बनाती हूं। हलुवा या खीर?"

सुहानी ने चहकते हुए कहा, "नहीं ममा। रसीले चमचम!"

महेश ने लंबी सांस लेते हुए कहा, "इतनी सुबह! ताजे चमचम तो किसी भी स्वीट्स शॉप में नहीं मिलेंगे। दोपहर तक इंतजार करना पड़ेगा।"

रीता तपाक से बोली, "यह कहो न आपको मार्केट नहीं जाना है। अरे! पैक्ड चमचम ले आना। किसी भी बड़ी दुकान में मिल जाएंगे। आप जाते हो कि मैं किसी को फोन करूं?"

महेश झट से खड़ा हो गया, "ओह! मैं तो भूल ही गया। अचार क्या और मिठाई क्या। आजकल तो सब कुछ पैक्ड आता है। खरीदो, खोलो और खा लो। मैं यूं गया और यूं आया।"

सुहानी जोर से बोली, "पापा। एक दो डिब्बों से काम नहीं चलेगा। मेरे क्लासमेट भी आएंगे। मम्मी की सहेलियां भी।"

महेश बाहर से ही बोला, "और मेरे दोस्त भी। चिंता मत करो, मैं दस-बारह डिब्बे ले आऊंगा।"

सुहानी वॉशरूम में और रीता रसोई से आंगन की ओर चली गई।

रविवार था, तो सुहानी को बधाई देने वाले आते ही रहे। सुहानी दिन भर फेसबुक और व्हाट्सऐप पर स्टेटस पढ़ती रही। दोपहर से पहले उसके कई क्लासमेट घर पर बधाई देने आ चुके थे। महेश कुछ दोस्तों को छोड़ने चला गया था।

दोपहर हुई, तो रीता ने कहा, "टाइम का पता ही नहीं चला। मैं कुछ बनाती हूं।"

सुहानी बोली, "ममा। मेरा तो मन नहीं कर रहा है। एक तो चमचम बहुत खा लिए। फिर बया, मिंटू, सफा बर्गर-पिज्जा-स्नेक्स ले आए। पेट में जगह ही कहां है? कुछ हलका ही बनाना।"

रीता ने नूडल्स बनाए। दोनों ने खाए और टीवी देखने लगे।

सोमवार की सुबह अपने नियत समय पर आ गई। सुहानी स्कूल चली गई। स्कूल से लौटी, तो महेश और रीता को स्कूल में मिली बधाइयों के बारे में ही बताती रही।

महेश ने कहा, "सुहानी। ये तो शुरुआत है। अगर मन से किसी काम को करो, तो सफलता जरूर मिलती है। वैसे किसी भी प्रतियोगिता में पीछे रहना बुरा नहीं है। इससे बुरा है, आगे रहने के लिए दूसरों के बारे में बुरा सोचना।"

सुहानी ने कहा, "पापा। मैं समझी नहीं।"

रीता ने कहा, "सुहानी, किसी भी कंपीटीशन में केवल आगे रहने के लिए हिस्सा नहीं लेना चाहिए। सीखने के लिए भाग लेना चाहिए।"

सुहानी ने कहा, "ओके। मैं समझ गई।" शाम के बाद रात हुई। सबने खाना खाया और सो गए।

अपने लेखक को जानिए

मनोहर चमोली 'मनु' : शिक्षक होने के साथ-साथ बाल साहित्य में सक्रिय। कई कहानियों का भारतीय सहित कई विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। कई पाठ्य पुस्तकों में कहानियां शामिल हैं। शिक्षा और साहित्य में आलोचना के लिए जाने जाते हैं। बीस से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं।

सुबह हुई। सुहानी स्कूल चली गई। दोपहर होने से पहले ही सुहानी के स्कूल से फोन आया, तो रीता ने महेश को फोन किया, "सुहानी अस्पताल में एडमिट है। जल्दी आओ। मैं वहीं पहुंच रही हूं।"

स्कूल के निकट गवर्नमेंट अस्पताल में सुहानी भर्ती थी। रीता और महेश आगे-पीछे ही अस्पताल पहुंचे।

डॉक्टर ने देखते ही कहा, "परेशान होने की बात नहीं है। खुला हुआ खाने से बैक्टीरिया शरीर में पहुंच गए हैं। ट्रीटमेंट चल रहा है। देर शाम के बाद आप सुहानी को घर ले जा सकती हैं। फिलहाल पांच दिन हलका खाना। बाहर का तो बिल्कुल नहीं।"

रीता बोल पड़ी, "लेकिन डॉक्टर। हम तो बाहर कभी कुछ खाना खाने जाते नहीं। खुला हुआ तो बिल्कुल भी नहीं खाते।"

डॉक्टर ने हंसते हुए कहा, "अच्छी बात है। लेकिन सुहानी ने बताया कि वह पिछले तीन-चार दिनों से पैक्ड भोजन कर रही थी। पिज्जा और बर्गर भी खाया है।"

महेश चौंका, "डिब्बा बंद! पैक्ड फूड? लेकिन बाजार में तो यह सब खुले आम बिक रहा है।"

डॉक्टर ने जवाब दिया, "महेश जी। बाजार में डिब्बा बंद भोजन हो या खुला भोजन। देखिए, तबियत बाजार की नहीं, आपकी बेटी की खराब हुई है। परेशान कौन हुआ? स्कूल स्टॉफ वक्त पर सुहानी को यहां ले आया। उल्टी और दस्त एक साथ होने से और लगातार होने से जान भी चली जाती है।"

रीता ने कहा, "पैक्ड भोजन तो सेफ होता है न सर? फिर सुहानी।"

डॉक्टर बीच में ही बोल पड़ा, "बैक्टीरिया के पनपने से ही कोई

भोजन खराब होता है। डिब्बाबंद भोजन पैक करते समय सुरक्षित होता है। लेकिन खुलने के बाद सूक्ष्म जीवाणु उसमें चले आते हैं। यदि हम उसे दूसरे और तीसरे दिन भी खाते रहें, तो वह सुरक्षित कहां रहा?" रीता और महेश डॉक्टर की बात गौर से सुन रहे थे।

डॉक्टर बता रहे थे, "एक बार डिब्बा खुला, तो जीवाणुओं को पनपने का मौका मिल जाता है। यह तो सब जानते हैं। जाने-अनजाने में हम कई बार गीले हाथ और गीला चम्मच उपयोग करते हैं।"

महेश ने कहा,"ओह! ये बात तो सही है।"

डॉक्टर ने बताया, "पैक्ड भोजन की पैकिंग हाई टैंप्रेचर पर सुरक्षित की जाती है। लेकिन कई बार न्यूनतम तापमान या अधिकतम तापमान पर पैकिंग के कारण इनका स्वाद, रंग-रूप और पोषक तत्व ताजा व मौसमी भोजन जैसा नहीं रह जाता। बेहतर तो यही है कि हम पका-पकाया और ताजा खाना खाएं। और हां, मौसमी चीजें खाएं।"

महेश ने बीच में कहा, "लेकिन, बाजार में तो अब पैक्ड भोजन धड़ल्ले से बिक रहा है!"

डॉक्टर बोले, "बाजार में तो सुई से लेकर हाथी तक उपलब्ध है। यह तो हमें तय करना है कि हम क्या खरीदें और क्या न खरीदें! यदि पैक्ड भोजन ही करना है, तो उसे खोलने के बाद जितना जल्दी हो, खा लें। पैकिंग से हटाने के बाद सुबह का दोपहर और दोपहर का शाम के लिए कतई न रखें। फास्ट फूड से बचें। तभी मैंने पहले कहा था बाहर का खाना खाने से बचें।"

रीता बोली,"थैंक्यू डॉक्टर। आप सही कह रहे हैं। हमें जोश के साथ होश भी बनाए रखना चाहिए। खुशी को एकदम शेयर करना अच्छा लगता है। लेकिन सेहत को ताक पर रखकर तो कतई नहीं। मैं तो हलुवा और खीर ही बनाना चाहती थी। लेकिन, सुहानी की इच्छा...।"

तभी सुहानी बीच में बोल पड़ी, "सॉरी मम्मी। मैंने पापा को बिना बताए एक डिब्बा स्कूल बैग में रख लिया था। हम सुबह से शाम तक एक-एक चमचम खाते रहे। हम भूल गए कि यह खतरनाक हो सकता है। डॉक्टर सर ने मुझे भी और हमारी बड़ी मैम को भी समझाया। हमारी स्कूल कैंटीन में तो फास्ट फूड और चिकनाई से बनी चीजें बनती ही नहीं। स्टूडेंट्स बैग्स में चोरी-छिपे बाजार से ये सब लाते हैं।"

डॉक्टर ने टोकते हुए कहा,"कोई बात नहीं। अब ध्यान रखना। कई बार हमारी छोटी-छोटी लापरवाही बुरे हादसों में बदल जाती है। अभी तुम आराम करो।" यह कहकर डॉक्टर दूसरे मरीजों को देखने चले गए।

घर का भोजन सुरक्षित भोजन। रीता और महेश एक-दूसरे को देखते हुए शायद यही कह रहे थे। ✪

अपने भीतर के लेखक को उड़ने के लिए खुला आसमान दें

- अपनी रचना को दूसरों के सामने लाने के लिए, अपनी कहानी, कविता या लेख को पी.डी एफ. फार्मेट में किताब या पत्रिका के रूप में दुनिया के सामने लाएं।
- आप केवल लिखें। बाकी सब हम पर छोड़ दें।
- ब्लैक एंड ह्वाइट या रंगीन चित्र भी बनवाने की सुविधा है।
- संपादन में 25 वर्षों का अनुभव

संपर्क करें

अनिल जायसवाल
9810556533 7982014609
akjaiswal2592@gmail.com

ANIL JAISWAL

Jais Features

akjaiswal2592@gmail.com
9810556533
7982014609

हिंदी में किसी भी प्रकार की, खास तौर पर बच्चों के लिए प्रकाशन सामग्री या कार्य के लिए संपर्क करें. प्रूफ रीडिंग, संपादन, संकलन, टाइपिंग, मैगजीन सेटिंग, डिजाइनिंग, पी.डी. फार्मेट में पत्रिका या ई. पत्रिका निकालने की सुविधा भी उपलब्ध है.

नंदन बाल पत्रिका में संपादन का 25 वर्षों का अनुभव

10 दिसंबर :
इंटरनेशनल माइग्रेंट्स डे पर विशेष

अंतरराष्ट्रीय प्रवासी दिवस

मानव इतिहास में, एक स्थान से दूसरी जगह प्रवास के लिए जाना सामान्य बात रही है। प्रवासी व्यक्ति विपरीत परिस्थितियों से उबरने और बेहतर जीवन जीने की इच्छा से अपना मूल स्थान छोड़कर कहीं और जाता है।

पर आरंभ में दुनिया इस तरह बंटी हुई नहीं थी। आज देशों की सीमाएं एक देश से दूसरे देश में लोगों को जाने से रोकती हैं। आज संचार और परिवहन में प्रगति के साथ, उन लोगों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है, जिनके पास अन्य स्थानों पर जाने की इच्छा और क्षमता है।

आज दो तरह के प्रवासी हम देखते हैं। नए युग ने दुनिया भर के लोगों के लिए चुनौतियां और अवसर पैदा किए हैं। कई व्यक्ति अपनी पसंद से बाहर प्रवास करते हैं, तो कई अन्य आवश्यकता के कारण बाहर पलायन करते हैं। इसलिए पढ़-लिखकर बेहतर भविष्य का सपना लेकर आज लोग अपना देश छोड़कर दूसरे देश में जा रहे हैं। ऐसा करने वाले लोग ज्यादातर गरीब या विकासशील देशों से होते हैं। खासकर एशिया के पढ़े-लिखे युवा समृद्ध देशों की ओर रुख करते हैं। उदाहरण के लिए भारत से गए प्रवासी आज अमेरिका और इंग्लैंड में बहुत बड़े-बड़े पदों पर हैं। अभी हाल में ही ट्विटर के सीईओ भारत से गए प्रवासी पराग अग्रवाल बने हैं।

इसके अलावा लाखों लोग शरणार्थी बनकर दूसरे देशों में पहुंचते हैं और फिर वहां अपनी नई जिंदगी शुरू करते हैं। ये भी प्रवासी ही होते हैं। हाल में म्यांमार के रोहिंग्या और अफगानिस्तान में तालिबान के कब्जे के बाद बहुत से देशों में अफगानिस्तान के लोगों को अपने यहां शरण दी है।

आज हालत यह है कि 2019 में, वैश्विक स्तर पर प्रवासियों की संख्या अनुमानित 27 करोड़ तक पहुंच गई, जो 2010 की तुलना में पांच करोड़ अधिक है।

प्रवासन आजकल दुनिया में अधिक ध्यान आकर्षित कर रहा है। अंतर्राष्ट्रीय प्रवास की चुनौतियों और कठिनाइयों के लिए देशों और क्षेत्रों के बीच सहयोग और सामूहिक कार्रवाई में वृद्धि की आवश्यकता है। संयुक्त राष्ट्र इस क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

हालांकि, कई लोग अक्सर गलत तरीके से दूसरे देश में जाने का प्रयास करते हैं। उन्हें तस्करी और शोषण के जोखिम का भी सामना करना पड़ता है। बिना किसी प्रक्रिया के अपने मूल देशों से गए प्रवासियों की जबरन वापसी करवाई जाती है।

19 सितंबर 2016 को संयुक्त राष्ट्र महासभा में अनेक देशों के नेता पहली बार प्रवासियों और शरणार्थियों की समस्या पर बात करने के लिए इकट्ठे हुए। यह माना गया कि अब यह एक वैश्विक समस्या है और इसपर सुहानुभूतिपूर्वक विचार होना चाहिए।

रचनाकार

दिशा ग्रोवर : कंप्यूटर इंजीनियर। बाल कविता, बाल नाटक और कहानियां लिखने में रुचि। 'प्रतिनिधि बाल कविता संचयन' (साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली) सहित अनेक पत्र-पत्रिकाओं में रचनाएं प्रकाशित।

अंकल सांता आए

सजा के पेड़ किसमस का
उस पर टाँगा मोजा
तारे करते टिम टिम टिम
छुपकर देखें रस्ता ।

आधी देखो रात हुई
गीत सभी ने गाए
आँख लगी जैसे ही पूरी
अंकल सांता आए।

कूद-कूद कर चिमनी से
घुसते हैं वे घर में
झट उड़ाके बिस्कुट-दूध
फुर्र हो जाते पल में।

हो हो हो गाते-गाते
सांता अंकल आते
लाद पीठ पर झोला वे
तोहफे ढेर लाते।

चिंटू की सूझबूझ

चिंटू दस वर्ष का हो गया था। उसके पापा फौज में थे। कभी-कभार ही छुट्टी पर घर आते थे। उनकी अनुपस्थिति में घर से बाहर के काम चिंटू ही करता था।

एक दिन मां ने चिंटू से कहा, "बेटा, एटीएम मशीन से कुछ पैसे निकलवाने थे। तुम मेरे साथ चलो।" मां ने पर्स से डेबिट कार्ड निकालते हुए कहा।

"लेकिन मां, तुम्हें तो बुखार है। बाहर गरमी भी बहुत है। मैं अकेला ही चला जाता हूं और रुपए निकलवा लाता हूं। घर के पास ही तो है।" चिंटू ने मम्मी का मोबाइल फोन टेबल पर रखते कहा।

"आज कल शहर में लूटपाट की वारदातें हो रही हैं। मुझे तो डर लगता है। तुम अकेले मत जाओ।" मां ने माथे पर हाथ रखते हुए कहा। वह कल से बीमार चल रही थीं।

"अरे मां, मैं अब बड़ा हो गया हूं और फौजी का बेटा हूं। मैं किसी से नहीं डरता। अकेले ही सरहद पर जाऊंगा...हा हा हा।" चिंटू ने थोड़ा मस्ती में आकर कहा और मां के हाथ से डेबिट कार्ड लेकर बाहर निकल गया।

मां उसे पीछे से आवाजें देती रहीं मगर चिंटू ने एक न सुनी और साइकिल पर चला पड़ा। एटीएम बूथ पर जाकर उसने देखा केबिन में कोई न था और न ही आसपास कोई व्यक्ति दिखाई दे रहा था। उसने सोचा आज तो एटीएम बूथ पर कोई भी दिखाई नहीं दे रहा। कहीं ऐसा तो नहीं, एटीएम मशीन में पैसे ही न हों? देखने के लिए उसने अपनी साइकिल एक ओर लगाई और एटीएम केबिन में चला गया। फिर उसने मशीन में कार्ड डाला और दो हजार रुपए निकलवा लिए।

तभी उसके पीछे एक व्यक्ति आ खड़ा हुआ, जिसने मास्क पहना था। उसकी हरकत से चिंटू को कुछ संदेह हुआ। उसे मां की बात याद आई कि बेटा जब भी एटीएम से पैसे निकलवाओ, तो किसी भी संदेहास्पद व्यक्ति के सामने मत निकलवाओ। या तो तुम्हारे साथ कोई होना चाहिए या फिर उस वक्त रुपए निकलवाने चाहिए जब आसपास और भी लोग पैसे निकलवाने के लिए आए हों।

लेकिन अब वह क्या करे? आसपास तो कोई भी नहीं और पैसे वह निकाल चुका था और जेब में डाले ही थे कि उसका शक सही निकला। उस व्यक्ति ने उसे चाकू दिखाते कहा, "लाओ, पैसे मेरे हवाले कर दो, वर्ना यह चाकू देखा है न तुमने... ?"

चिंटू बहादुर तो था ही, उसने धैर्य से काम लिया। जेब में डाला हाथ उसने बाहर निकाला, तो बड़ी फुर्ती से लुटेरे की आंखों में कुछ झोंक दिया। जिससे वह एक दम घबरा गया और छटपटाने लगा। चाकू उसके हाथ से गिर चुका था।

यही अवसर था। चिंटू तेजी से बूथ से बाहर निकला और शोर मचाने लगा,"चोर...,चोर..., पकड़ो...।"

दो व्यक्ति बाइक पर उधर ही आ रहे थे। उन्होंने भागने की कोशिश कर रहे लुटेरे को कसकर पकड़ लिया और अन्य कुछ और लोगों की मदद से पुलिस के हवाले कर दिया।

पुलिस को इस लुटेरे की काफी समय से तलाश थी। उन्होंने चिंटू के साहस और सूझबूझ की तारीफ की और उसका पता और मोबाइल नंबर लेकर चले गए।

चिंटू जब घर पहुंचा, तो उसने अपनी मां को बात बताई। इस पर मां ने पूछा, "मगर तुमने उस लुटेरे की आंखों में ऐसा क्या डाल दिया कि वह अपना संतुलन गंवा बैठा और पकड़ा गया?'

"मां, रुपए निकलवाने से पहले तुमने बनिए की दुकान से मुझसे जो

अपने लेखक को जानिए

हरिन्दर सिंह गोगना : पंजाबी विश्वविद्यालय, पटियाला (पंजाब) में कार्यरत। सात सौ से अधिक बाल कविताएं, बाल कहानियां, लेख, लघुकथाएं विभिन्न पत्रिकाओं व अखबारों में प्रकाशित। नंदन, चंपक, बालहंस, नन्हे सम्राट, व जनसत्ता, दैनिक भास्कर, अमर उजाला, दैनिक जागरण, पंजबा केसरी, दैनिक ट्रिब्यून आदि प्रतिष्ठित अखबारों में रचनाओं का निरंतर प्रकाशन।

लाल मिर्च का पाउडर मंगवाया था। यह उसी का कमाल है। मिर्च वाला पैकेट एक कोने से फटा हुआ था जिससे मिर्च का कुछ पाउडर मेरी जेब में ही पड़ा रह गया। जिसका अनुमान मुझे जेब में एटीएम बूथ से निकाले पैसे रखते हुए हुआ। इधर बूथ में घुस आया लुटेरा मेरे सामने चाकू लेकर तना खड़ा था। मैंने जेब में पड़ा उस मिर्च के पाऊडर को मुट्ठी में समेटा और लुटेरे की आंखों में झोंककर उसे बेबस कर दिया।”

चिंटू की बात सुनकर पहले तो उसकी मम्मी घबरा गई, मगर फिर उन्हें गर्व से चिंटू को सीने से लगा लिया और यह बात चिंटू के पापा को भी फोन पर बताई।

शाम पुलिस थाने से चिंटू के मम्मी को फोन आया कि चिंटू के बदौलत जो लुटेरा पकड़ा गया था उसके गिरोह के बाकी लोग भी पकड़े गए हैं। पुलिस विभाग की ओर से शीघ्र ही चिंटू को बहादुरी पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा।

चित्र : नीतू खोहवाल

अपने लेखक को जानिए

राम करन : वायु सेना से सेवा निवृत्ति के बाद फिलहाल अध्यापन। कई कहानियां, कविताएं प्रकाशित। डॉक्टर परशुराम शुक्ल बाल साहित्य पुरस्कार 2018 का तृतीय पुरस्कार।

टपकी ओस

रत्ती भर ओस,
पत्ती पर अटकी।
हवा पास में,
धीरे से फटकी।

जैसे पेड़ ने,
टहनी झटकी।
टप्प से ओस,
जमीं पर टपकी।

मिट्टी ओस को,
झट से गटकी।
बोली, अब तक,
कहाँ थी अटकी।

हरियल तोता

एक ठूँठ की ओर इशारा
कर दादी से बोला पोता।
दादी दादी उधर देखिए,
बैठा हरे रंग का तोता।

कैसा अचरज है दादीजी,
देखो तो कैसा कमाल है।
कंठी हल्की लाल गले में,
पंख हरे हैं, चोंच लाल है।

दादी बोलीं कई रंग के,
बेटे पाए जाते तोते।
श्वेत, बैंगनी, नीले-पीले,
रंगों के भी तोते होते।

हरी मिर्च,अमरूद,आम,फल,
कुतर-कुतर खाते-फैलाते।
हम लोगों की तरह बोलना,
सीख बहुत जल्दी ये जाते।

हम इसको पालेंगे घर पर,
पिंजरा एक मँगाओ दादी।
दादी बोलीं-कैद करें क्यों,
उसको भी प्यारी आजादी।

और निकट-से उसे देखने
पहुँचा चुपके-चुपके पोता।
आसमान में फुर्र हो गया,
टें-टें करता हरियल तोता।

अपने लेखक को जानिए

राजेन्द्र श्रीवास्तव : सेवा निवृत्त प्राचार्य (हाई स्कूल), पत्र पत्रिकाओं में बाल साहित्य का प्रकाशन, आकाशवाणी से भी यदा-कदा बाल कविता, कहानी का प्रसारण। बाल विधा की तीन पुस्तकें प्रकाशित।

स्वेटर

"मां, यह तुम क्या बना रही हो?" हनी ने अपनी मां के पास घुटनों के बल बैठते हुए पूछा।

मां बोलीं, "इस जाड़े, मैं तेरे लिए अपने हाथों स्वेटर बना रही हूं।"

"लेकिन मां, मेरे पास तो बहुत सारे स्वेटर हैं, जैकेट हैं, फिर इसकी क्या जरूरत है?" हनी बोला।

मां हनी की बातें सुन रही थीं और मुसकराते हुए स्वेटर बुन रही थीं। हनी जिज्ञासा के साथ कभी मां के चेहरे, कभी स्वेटर बुनती सलाइयों और ऊन को देख रहा था।

हनी ने ऊन का गोला अपने हाथ में पकड़ लिया। उसे बड़ा मजा आ रहा था कि कैसे गोले से ऊन निकलकर, सलाइयों से होकर खूबसूरती से स्वेटर में तब्दील होता जा रहा था।

"सच में जब इसका बनना इतना प्यारा है, तो इसको पहनने में तो वाकई बहुत मजा आएगा।" हनी ने अपनी खुशी जाहिर की।

मां मुसकुराते हुए बोलीं, "हां बेटा, मुझे भी इस स्वेटर को बुनने में काफी सुकून मिल रहा है। वैसे भी मैंने बहुत दिनों से स्वेटर नहीं बुना है, तो कुछ वक्त यूं बिताना अच्छा लग रहा है।"

मां ने स्वेटर का हनी के कंधे से नाप लेते हुए बोली, "जरा दिखा तो, कितना हो गया।"

हनी ने स्वेटर को जब आगे से देखा तो बोला, "अरे वाह मां! इस पर तो फूल भी हैं लाल, पीले, नीले।"

मां उंगली से नाप लेती हुई बोलीं, "हां बेटा, ये स्वेटर जब सामने से देखो, तभी डिजायन दिखती है।"

हनी बोला, "मां, जल्दी से यह स्वेटर बना दो, ताकि मामा की शादी

चित्र : सुशील दोषी

में मैं इसे ही पहनकर जाऊं।"

मां बोलीं, "अच्छा मेरे राजा बेटे, अब जाओ थोड़ी पढ़ाई कर लो।"

हनी उठा और गुनगुनाता हुआ कमरे में चला गया।

हनी अब मां के पास जब भी आता, स्वेटर को नपवाता और पूछता, "मां, यह कब तैयार होगा?"

मां कहतीं, "बस बेटा, जल्दी ही। अब मैं कोई मशीन थोड़े ही हूं जो झटपट इसे बना दूं।"

लेकिन, हनी तो स्वेटर को लेकर सपने बुन रहा था कि कैसे वह अपने दोस्तों को मां के हाथ का बना स्वेटर दिखाएगा। उनके लिए तो यह एकदम नई चीज होगी क्योंकि उसके किसी दोस्त के पास हाथ का बना स्वेटर नहीं है।

आज हनी बेहद खुश था। उसकी मां, स्वेटर में सिलाई जो कर रही थीं, और थोड़ी ही देर में उसे स्वेटर मिलने वाला था।

हनी खुशी से उछल पड़ा और बोला, "अब जल्दी से मुझे स्वेटर दे दो। दोस्त मेरा इंतजार कर रहे होंगे। मैंने उनसे कहा था कि आज मैं शाम को पार्क में मां के हाथ का बनाया स्वेटर पहनकर आऊंगा।"

मां ने हनी को स्वेटर पहनाया और इससे पहले कि वो ठीक से हनी को स्वेटर पहनाकर देख पातीं, हनी पार्क की ओर साइकिल लेकर दौड़ पड़ा। पार्क में दोस्तों की टोली हनी का इंतजार जो कर रही थी।

अचानक हनी की साइकिल की चेन उतर गई। अब ये क्या, उसे तो चेन चढ़ानी भी नहीं आती। वह परेशान हो उठा, अब ये नया स्वेटर वह कैसी सबको दिखा पाएगा!

तभी सड़क किनारे खड़े एक लड़के पर उसकी नजर गई, जो उसकी ही उम्र का था। अरे, यह तो वही लड़का है जो उसे स्कूल के बाहर अक्सर दिखता है।

"अरे तुम यहां!" हनी ने उस लड़के से पूछा।

वह मुसकाया और बोला, "हां, मैं यहीं रहता हूं।"

"यहां कहां?" हनी ने उत्सुकता से पूछा।

लड़के ने पेड़ के नीचे बनी झोंपड़ी की ओर इशारा किया। उसने हनी को परेशान देखकर पूछा, "तुम कुछ परेशान दिख रहे हो, क्या बात है?"

हनी ने उसे बताया कि कैसे उसकी साइकिल की चेन उतर गई है, और उसे चढ़ानी नहीं आती...।

लड़का मुसकाया और बोला, "बस इतनी सी बात। लाओ मैं चढ़ा दूं। आखिर, यही तो काम है हमारा।"

"ओह! तभी तुम साइकिल की दुकान पर रहते हो।"

लड़के ने 'हां' में जवाब दिया।

हनी ने नाम पूछा, तो लड़के ने चेन सही करते हुए बताया, "बबलू।"

चेन सही हो गई, तो हनी ने बबलू को थैंक्यू कहा। बबलू बोला, "कोई बात नहीं, तुम्हारा काम हुआ मुझे अच्छा लगा।"

तभी पीछे से बबलू की मां ने आवाज लगाई, "बबलू बेटा, जा जल्दी से रात होने से पहले तेल-मिर्च ले आ, नहीं तो फिर तू कहेगा मां सर्दी लग गई। वैसे भी तेरा इकलौता स्वेटर आज बंदर ले गया। अब न जाने कैसे जाड़े कटेंगे!"

बबलू हनी से मुंह छिपाते हुए पास में परचून की दुकान पर तेल-मिर्च लेने चला गया।

अब रात होने लगी थी, हनी ने वापस घर जाना उचित समझा। अब उसे दोस्तों को स्वेटर दिखाने की भी कोई जल्दी नहीं थी। हनी जब घर पहुंचा, तो मां खाना बना रही थीं। हनी ने जाकर मां से पूछा, "मां, आप ऐसा दूसरा स्वेटर कितने दिनों में बना सकती हो?"

मां बोलीं, "बेटा, अब तू दूसरा स्वेटर भूल ही जा क्योंकि तेरे मामा की शादी की तैयारी का बहुत काम है। वैसे भी तू शादी में एक ही स्वेटर तो पहनेगा ना!"

हनी फीकी-सी मुसकराहट के साथ कमरे में चला गया।

अगले दिन शाम को हनी साइकिल से पार्क पहुंचा, तो वह बहुत खुश था। वह अकेला नहीं था। उसके साथ, उसका नया साथी बबलू भी था। सारे दोस्तों ने आकर हनी को घेर लिया और कहने लगे, "यार हनी, आज तो स्वेटर दिखा दे, हम कब से इंतजार कर रहे हैं! कल भी हम सब, तेरा इंतजार कर-करके घर लौट गए।"

हनी ने थैली में से स्वेटर निकाला तो सभी दोस्त, स्वेटर देखते रह गए। लेकिन हनी ने स्वेटर खुद पहनने की जगह बबलू को पहना दिया।

बबलू हैरान था, वह कुछ समझ पाता तब तक हनी, बबलू से बोला, "दोस्त, अब सर्दी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती, क्योंकि तुम्हारे तन पर मां के हाथ का बना स्वेटर है।"

सारे दोस्त मां का बनाया स्वेटर देख रहे थे जबकि बबलू, हनी को देख रहा था। ✪

अपने लेखक को जानिए

निश्चल : शिक्षक हैं, पर मन से साहित्यकार। बच्चों की बात बच्चों ही नहीं, पूरे समाज तक पहुंचे, चाहे किसी भी माध्यम से, इसके लिए कोशिश करते हैं। बाल पत्रिका 'अभिनव बालमन' 2009 से शुरू की और उसके संपादक के रूप में भी कार्य रहे हैं। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा लल्ली प्रसाद पाण्डेय बाल पत्रकारिता सम्मान मिला।

अपने लेखक को जानिए

शिवचरण चौहान : बाल साहित्य की 3 पुस्तकें प्रकाशित एक प्रकाशनाधीन। करीब 35 साल से बच्चों के लिए लेखन। उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान सहित अनेक संस्थानों द्वारा पुरस्कृत और सम्मानित। एक मीडिया संस्थान में वरिष्ठ समाचार संपादक।

अपना मीत बनाऊं

फुर्र चिरैया
आजा भैया
तुमको अभी बुलाऊं।
बनवाया
गाजर का हलवा
अपने हाथ खिलाऊं।।

ची-ची चूं-चूं मीठे-मीठे
गाती प्यारे गीत।
आजा मेरे पास
बना लूं तुमको अपना मीत।
चलो घूमने मेला
जो भी कहो
आज खिलवाऊं।।

तेरे नन्हे से दो बच्चे
कितने प्यारे-प्यारे।
नन्हे नन्हे पंख, चोंच हैं
लगते राज दुलारे।
आजा मेरे घर में
दादा-दादी से मिलवाऊं।।

तेरा नया घोंसला
बनवा दूंगा अपने घर में।
तुम भी रहना साथ हमारे
अपने प्यारे घर में।
कथा कहानी
रोज किताबों से
पढ़ तुम्हें सुनाऊं।।

जाड़ा बाबा क्यों आया ?

जाड़ा बाबा क्यों आया है ?
इतनी सर्दी क्यों लाया है ?

गरम-गरम हम चाय पी रहे
फिर भी ठिठुरन नहीं मिट रही
कम्बल और रजाई ओढ़ी
फिर भी ठण्डक नहीं हट रही।

दिन छोटा और रात बड़ी है
मीना बहन बीमार पड़ी है
जरा जोर की धूप खिला दे
मीना को तू जरा हंसा दे।

नन्दू नहाने से डरता है
काम नहीं कुछ भी करता है
रोज डांटती जब भी मम्मी
डर कर दूर भागती पम्मी।

कहना मानो बाबा मेरे,
मत आओ तुम सांझ-सवेरे
भरी दुपहरी में ही आओ
साथ बैठकर गप्प लगाओ।

कहीं धूप कहीं छाया है
जाड़ा बाबा क्यों आया है ?

अपने लेखक को जानिए

पूरन सरमा : पांच दशकों से हिंदी और राजस्थानी में लेखन। व्यंग्य के लिए अनेक बार पुरस्कृत और सम्मानित। राजस्थान साहित्य अकादमी के 'कन्हैयालाल सहल पुरस्कार' से सम्मानित। अनेक रचनाओं का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद। बाल साहित्य की 20 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन।

हम होंगे कामयाब

पक्षियों के चहचहाने से चिराग की आंख खुली। उसने देखा, दादाजी सोए हुए थे। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह दादाजी के पास गया। उनसे पूछा, "आपकी तबीयत ठीक तो है, आप टहलने नहीं गए?"

दादाजी बोले, "लल्ला, नींद की कमी हो गई है। कई रातों से ठीक से सो नहीं पा रहा हूं।"

चिराग ने आश्चर्य से पूछा, "क्यों दादाजी?"

दादाजी ने कहा, "मुझे शोरगुल की आदत नहीं है। शायद इससे मुझे असुविधा हो रही है।"

चिराग, दादाजी को सुस्त देख, चिंतित हो गया। वही तो दादाजी को मनुहार कर, गांव से शहर लेकर आया। परंतु वह महसूस कर रहा था कि पिछले कई दिनों से दादाजी चिड़चिड़े हो गए हैं। तभी मम्मी ने आवाज लगाई, "चिराग जल्दी से तैयार हो जाओ। स्कूल के लिए लेट हो जाओगे।"

चिराग फटाफट तैयार होने लगा। फिर स्कूल के लिए रवाना हो गया। सोसाइटी के फाटक से बाहर निकलते ही, उसे सामने वाले मैरिज गार्डन से सुबह भी बैंड-बाजे की धुन सुनाई दी। वहां कोई शादी उत्सव था। आज चिराग को बैंड की धुन से चिढ़ होने लगी। उसे लगा मानो ये नगाड़े उसके उसके सिर पर बज रहे हैं।

चिराग दादाजी की परेशानी के बारे में सोचते हुए स्कूल पहुंच गया। स्कूल के बाहर बच्चों की भीड़ होने से बस, ऑटो और गाड़ियों के हॉर्न बज रहे थे। आज उसे हॉर्न से चिढ़ हो रही थी। उसे ऐसा लग रहा था कि उसके कान के पर्दे फट जाएंगे।

तभी वह सोचने लगा। आज उसे इन सब से आपत्ति क्यों हो रही है? यह सब कुछ तो रोज होता है। उसे बचपन से इन सब की आदत है।

चिराग कक्षा में बैग रखकर प्रार्थना स्थल की ओर बढ़ गया। थोड़ी ही देर में प्रार्थना स्थल बच्चों से सज गया। प्रार्थना के बाद, प्रिंसिपल सर ने 'ध्वनि प्रदूषण के कारण और उपाय' पोस्टर प्रतियोगिता के बारे में जानकारी देते हुए बताया, "यह प्रतियोगिता दो वर्गों में आयोजित होगी। प्रत्येक वर्ग में से तीन श्रेष्ठ पोस्टर को नकद पुरस्कार और ट्रॉफी दी जाएगी। ये पोस्टर कल, घर से बना कर लाने हैं।"

> ## रचनाकार को जानिए
>
> **उषा सोमानी : पूर्व व्याख्याता (अर्थशास्त्र), पत्र-पत्रिकाओं में बाल कहानी, बाल कविता, लघुकथा और आलेख प्रकाशित। बच्चों के लिए लेखन से उन्हें असीम आनंद और अनोखी ऊर्जा प्राप्त होती है।**
>
>

प्रार्थना के बाद, बच्चे अपनी कक्षा की ओर चल दिए। बच्चों में पोस्टर प्रतियोगिता को लेकर उत्साह था।

पोस्टर प्रतियोगिता की घोषणा से चिराग ऐसे खुश था जैसे उसको तो मन की मुराद मिल गई। कक्षा में आज उसका मन पढ़ाई में न था। उसे छुट्टी होने का इंतजार था। उसका इंतजार खत्म हुआ। स्कूल में छुट्टी की घंटी बजी। टीचर कक्षा छोड़कर जा चुकी थी। थोड़ी देर पहले का अनुशासन अब एक तूफान में बदल चुका था। कक्षा में टेबल- कुर्सी के सरकाने के कर्कश स्वर के साथ, बच्चों ने हो-हल्ला मचा रखा था। कक्षा के कुछ शरारती बच्चों में अभी भी ऊर्जा बाकी थी। वे चाक के टुकड़े कक्षा में इधर-उधर, एक-दूसरे पर फेक रहे थे। तभी चाक का एक टुकड़ा चिराग के सिर पर आकर लगा। वह गुस्से से बिफर गया। अपना बैग छोड़कर बोला, "आज तुम को नहीं छोड़ूंगा!"

चिराग को गुस्से में देख, क्षितिज ने उसे संभालते हुए, अपनी बाहों में कसकर पकड़ लिया। वह बोला, "क्या बात है? आज बहुत उखड़े हुए नजर आ रहे हो।"

चिराग खीजकर बोला, "छुट्टी की घंटी बजती है और ये कक्षा में शोर मचाना शुरू कर देते हैं। टेबल-कुर्सी को इधर-उधर गिराते हैं। ध्वनि प्रदूषण करते हैं।"

क्षितिज मुसकराकर बोला, "हमें आदत है। क्यों अपना मूड खराब करते हो?"

चिराग और क्षितिज ने कंधे पर बैग लगाया और वे बस की ओर बढ़ गए। चिराग के मन में आज एक ही प्रश्न था ध्वनि प्रदूषण। वह सोचते-सोचते बस में चढ़ गया और स्टॉप पर उतर कर घर भी पहुंच गया।

मां ने पूछा, "आज शांत कैसे हो। ये शांति तूफान से पहले की या तूफान के बाद की?"

चिराग ने कहा, "मुझे ध्वनि प्रदूषण पर प्रतियोगिता के लिए पोस्टर बनाना है।"

मां ने कहा, "पहले हाथ मुंह धो कर, चेंज कर लो। नाश्ता कर लो। फिर पोस्टर बनाना।"

थोड़ी देर बाद चिराग पेपर, पेंसिल और कलर लेकर बैठ गया। उसने टेबल पर शीट बिछाई। वह सोचने लगा। तभी दादाजी की आवाज सुनाई दी, "चिराग बेटा, स्कूल से आ गए।"

"हां, दादाजी। आप सो रहे थे।"

"हां बेटा, आजकल पूरा दिन ऐसे ही बीत जाता है।"

चिराग सोचने लगा, 'दादाजी, जब से शहर आए हैं उनका स्वास्थ्य गड़बड़ा गया है। इसका मुख्य कारण है, रात में उनका ठीक से सो न पाना। घर के पास स्थित मैरिज गार्डन में देर रात तक डी जे और माइक के कारण बहुत शोर होता है। शादी उत्सव के कारण पटाखों का भी काफी शोर होता है। इन्हीं सबकी वजह से दादाजी की नींद में खलल होती है।'

अचानक उसके उदास चेहरे पर एक मुसकान छा गई जैसे कोई जादुई चिराग मिल गया। वह तुरंत अपनी ड्रॉइंग शीट पर चित्र बनाने लगा। उसने मैरिज गार्डन बनाया। जहां डी जे और माइक, दूसरी ओर आतिशबाजी, बैंड-बाजे आदि के दृश्य बनाएं। यह सभी दृश्य बनाकर चिराग काफी संतुष्ट था।

वह सोचने लगा, "ध्वनि प्रदूषण के कारण तो अंकित कर दिए। परंतु इन के उपाय, क्या वह मेरे बस में है? वह पेन रखकर, बिस्तर में जाकर लेट गया। तभी उसके मन से आवाज आई, उठो चिराग। असंभव कुछ भी नहीं है। उठाओ कलम।

चिराग पुनः ऊर्जा से भर, ड्राइंग शीट पर चित्र बनाने बैठ गया। ✪

चित्र : सुशील दोषी

कोलकाता

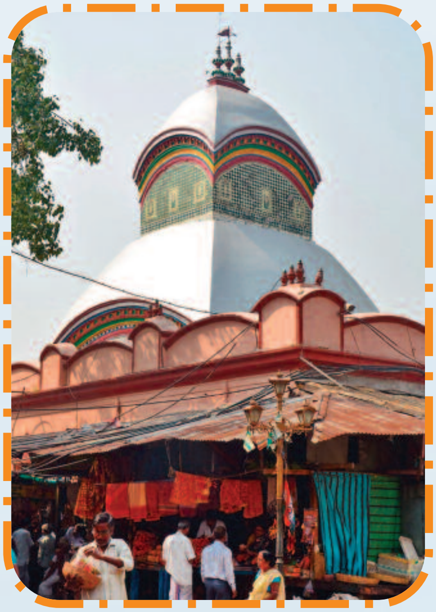

कोलकाता की बात ही निराली है। पुराने भारत की तसवीर समेटे अंग्रेजों के समय में सन 1911 तक भारत की राजधानी रहे इस शहर में देखने को बहुत कुछ है। खास तौर पर यदि आप दशहरे के दौरान दुर्गा पूजा के अवसर पर कोलकाता घूमने का प्रोग्राम बनाते हैं, तो आप इस नगरी को भूल नहीं पाएंगे।

विक्टोरिया मेमोरियल : कोलकाता का सबसे बड़ा आकर्षण है विक्टोरिया मेमोरियल। सर विलियम एमरसन ने इसे डिजाइन किया था। क्वीन विक्टोरिया की भारत यात्रा की याद में बनी इस इमारत को 1921 में आम लोगों को लिए खोला गया। सफेद संगमरमर से बनी यह अद्भुत इमारत अब एक संग्रहालय भी है।

नेहरू चिल्ड्रन म्यूजियम : चौरंगी लेन पर इस बहुमंजिली इमारत में बने इस डॉल म्यूजियम में बच्चों का खूब मन लगता है। 1960 में बने इस म्यूजियम में देश-विदेश के हजारों गुड्डे-गुड़ियां अपनी सुंदरता से आपका मन मोह लेंगे। यहां महाभारत और रामायण को जीवंत रूप में बच्चों के लिए प्रदर्शित किया गया है।

इंडियन म्यूजियम : 1814 में बना यह म्यूजियम एशिया के सबसे पुराने संग्रहालयों में से एक है। इसके अजब-गजब संग्रह को देखकर इसे जादूघर भी कहा जाता है। यहां चार हजार वर्ष पुरानी ममी व कई प्राचीन वस्तुएं जहां ज्ञान बढ़ाती हैं, वहीं जानवरों और चिड़ियों का कलेक्शन देखकर ऐसा लगता है कि जैसे वे अभी जावित हो जाएंगे।

ट्राम और अंडरग्राउंड मेट्रो : कोलकाता के आकर्षण में ट्राम भी शामिल है। भारत में ट्राम में घूमना हो तो आपको कोलकाता ही जाना पड़ेगा। आज भी कोलकाता की सड़कों पर ट्राम देखकर इसमें यात्रा करने से आप खुद को नहीं रोक पाएंगे। यहां बना मेट्रो भारत का पहला अंडरग्राउंड मेट्रो है।

बोटानिकल गार्डन : कोलकाता से करीब आठ किलोमीटर दूर यह बोटानिकल गार्डन अपने बरगद के पेड़ के लिए विश्व में मशहूर है। करीब दो सौ-ढाई सौ वर्ष पुराने एक ही पेड़ की शाखाएं आपस में मिलकर बढ़ते-बढ़ते इतनी बड़े पेड़ में बदल गया कि लोग देखकर दंग रह जाते हैं। इस गार्डन को 1787 में बनाया गया था। विलियम रोक्सबर्ग ने पूरे भारत से सैकड़ों पौधों को लाकर यहां रोपा था।

अलीपुर चिड़ियाघर : इस चिड़ियाघर में ढेरों जानवर देखने को मिल जाते हैं। यहां ब्रिटिश ईस्ट इंडिया के

गर्वनर जनरल लॉर्ड क्लाइव का कछुआ था, जो 1750 में पैदा हुआ था। 2006 में यहां उसकी मृत्यु हुई थी।

काली मंदिर : कालीघाट स्थित काली मंदिर की बड़ी महिमा है। यह 51 शक्ति पीठों में से एक है।

बीबीडी बाग : स्वतंत्रता सेनानियों विनय, बादल और दिनेश के नाम अर्पित यह बाग व्यस्त कोलकाता में हरियाली और छोटी सी झील के कारण सुकून का एहसास देता है। इसके एक और धर्मतल्ला है, तो दूसरी ओर राइट्र्स बिल्डिंग, जहां बंगाल सरकार का मुख्यालय है।

बाजार : न्यू मार्केट, एस्प्लेनेड और चौरंगी के भव्य बाजार खरीदारी करने के लिए बहुत अच्छे माने जाते हैं।

दक्षिणेश्वर काली मंदिर : हुगली नदी के तट पर स्थित इस काली मंदिर का निर्माण सन 1855 में रानी रशमोनि ने करवाया था। स्वामी रामकृष्ण इसी मंदिर के पुजारी थे और उनकी मां काली के प्रति अनन्य भक्ति लोगों को इस मंदिर में आने के लिए प्रेरित करती है।

बेलूर मठ : कोलकाता के पास हुगली के तट पर बेलूर मठ है। यहां के रामकृष्ण मठ का निर्माण स्वामी विवेकानंद ने अपने गुरु की याद में करवाया था। अपने जीवन के अंतिम दिन विवेकानंद ने यहीं बिताए थे।

इसके अलावा भी 'साइंस सिटी', 'फोर्ट विलियम', 'ईडन गार्डन' सहित अनेक स्थल हैं, जिन्हें आप घूमते-घूमते थक जाएंगे, पर घूमने के स्थान कम नहीं होंगे।

आप कोलकाता के पास ही स्थित 'शांति निकेतन' और विश्व विरासत में शामिल टाइगर रिजर्व 'सुंदरबन' भी देखने जा सकते हैं।

कैसे जाएं : कोलकाता पूरे भारत से सड़क और रेल यातायात द्वारा जुड़ा हुआ है। यहां के लिए प्रमुख बेस रेलवे स्टेशन हावड़ा है। यहां उतरकर कोलकाता जाया जा सकता है। कोलकाता के अंदर सियालदह स्टेशन भी है, पर यहां से कम ट्रेन उपलब्ध हैं। कोलकाता के लिए निकटतम हवाई अड्डा दमदम स्थित 'नेताजी सुभाष चंद्र बोस इंटरनेशनल एयरपोर्ट' है।

आराम हराम है

कुटिया नाम के जंगल में झब्बू झींगुर रहता था। जंगल में बड़े-बड़े पेड़ थे। बीच-बीच में खुला मैदान था। उस मैदान में फूलों के बहुत सारे पेड़ थे। फूलों के अगल-बगल बहुत सुंदर घास उगी थी, जो गरमियों तक रहती थी।

आज सुबह उठकर झब्बू झींगुर बहुत खुश था। अपने कोटर से बाहर आकर उसने चारों ओर देखा। बहुत सुंदर फूल खिले थे। फूल देखकर वह और खुश हो गया। मधुर गीत गाते हुए वह घास में उछलने लगा। वह घास में एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदने लगा।

उसी बीच घास में से उसने अपना खाना भी खोज लिया। भर पेट भोजन कर के झब्बू एक पेड़ की जड़ के पास जाकर लेट गया। थोड़ी ही देर में उसकी नाक बोलने लगी। उसे गहरी नींद आई थी कि उसका शरीर कांपने लगा। उसकी आंखें खुल गईं।

आंखें खुलने पर झब्बू को लगा वह मात्र कांप ही नहीं रहा, धम्म-धम्म की आवाज भी आ रही है। झब्बू सोच में पड़ गया कि यह धम्म-धम्म की आवाज कहीं हाथियों के आने की तो नहीं। पर उसे ख्याल आया कि हाथियों की धमाधम्म तो उसे एक-एक इंच उछाल देती है। झब्बू जिस पेड़ के पास सोया था, उस पर चढ़ने लगा। चार-पांच छलांग में ही वह पेड़ पर पहुंच गया।

वहां से वह आंखें चौड़ी कर के चारों ओर देखने लगा। तभी उसने देखा कि चींटियां एक लाइन से पेड़ पर चढ़ रही थीं। सभी अपनी पीठ पर भारी बोझ लिए हुए थीं। किसी की पीठ पर चावल का दाना था, तो किसी की पीठ पर बाजरे का दाना था। झब्बू झींगुर कूदकर चींटियों के पास पहुंच गया। चींटियों को उस तरह एक लाइन में जाते देख झब्बू को बहुत अच्छा लग रहा था। उन्हें उस तरह जाते वह देखता रहा और मन ही मन सोचता रहा। ये चींटियां भी कितनी मेहनत करती हैं। जब भी देखो काम ही करती रहती हैं। जैसे कभी इनका आराम करने का मन ही नहीं होता

उसका क्या, यह सोचते हुए अपनी जगह पर आ रहा था तभी उसने देखा, एक चींटी गेहूं का दाना लिए हिलती-डुलती चली आ रही

थी। वजन अधिक होने की वजह से वह चल नहीं पा रही थी, इसीलिए सबसे पीछे थी।

झब्बू झींगुर ने कहा, "क्यों चींटी बहन, इतना अधिक वजन लेकर क्यों चल रही हैं? अगर थक गई हैं तो थोडा आराम कर लीजिए।"

"नहीं भाई, आराम के लिए समय नहीं है। काम करना बहुत जरूरी है। आगे खराब दिन आ गए तो...?"

"अरे बहन थोड़ा तो आराम कर लो।" झब्बू झींगुर ने कहा।

"बिल्कुल आराम नहीं कर सकती। इस दाने को बिल तक पहुंचा कर कुछ खाने को मिल जाएगा, तो थकान वैसे ही मिट जाएगी।" चींटी ने कहा।

झब्बू झींगुर ने मजाक किया, "चींटी बहन, आप तो बहुत जिम्मेदार हैं। मुझे देखो, मै किस तरह मौज से रह रहा हूं।"

चींटी ने चलते हुए ही कहा, "झींगुर भाई तुम्हारी बात अलग है। तुम अभी इसी ऋतु में पैदा हुए हो, तुम्हें तो कुछ पता नहीं है। मुझे पता है कि आगे क्या होगा, इसलिए मुझे तो काम करना ही पड़ेगा।"

चींटी गेहूं का दाना लिए हिलती-डुलती अपनी बिल की ओर बढ़ती रही। जबकि झब्बू झींगुर आराम से पेड़ की जड़ पर बैठ कर चींटियों की हंसी उड़ाते हुए अपनी पसंद का गाना गाता रहा। भूख लगती, तो घास से अपने लिए कुछ खाने को खोज लेता।

देखते-देखते दिन बीत गए। बसंत के बाद गरमी की ऋतु आ गई। फूलों के पेड़ ही घास भी सूखने लगी। पेड़ों के पत्ते भी पीले पड़ गए। गरमी से सब तपने लगे। घास में रहने वाले जीव-जंतु भूख-प्यास से मरने लगे। झब्बू झींगुर भी भूख से तड़पने लगा। वह जिस घास से अपने खाने के लिए खोजता था, वह नष्ट हो चुकी थी। उसे खाने को कुछ नहीं मिल रहा था। गरमी में वह तप जाता था। पीने को पानी भी नहीं मिल रहा था।

अचानक झब्बू झींगुर ने देखा कि दो चींटियां लकड़ी ले कर जा रही हैं। झब्बू भागकर उसके पास पहुंचा। शरमाते हुए बोला, "चींटी बहन आप लोगों को भूख-प्यास नहीं लगती?"

"लगती है न। पर हमने अपनी बिल में खाने-पीने की व्यवस्था कर रखी है न।"

"मैं भी आपकी बिल में आऊं?" झब्बू झींगुर ने पूछा।

"नहीं, तुम मेरी बिल में नहीं आ सकते। जिसने काम किया हो, वही बिल में आ सकता है।"

झब्बू झींगुर गिड़गिड़ाया, "बिल में आने दो न। मैं भी काम करूंगा। जो काम कहोगी, वह काम करूंगा।"

एक वृद्ध चींटी ने कहा, "आसपास से इसी तरह की लकड़ी बीनकर बिल के पास ले आओ, तो खाने-पीने को मिलता रहेगा।"

झब्बू झींगुर तुरंत काम पर लग गया। तब से वह लगातार काम कर रहा है। चींटियां उसे खाने-पीने को दे रही हैं।

काम करते हुए झब्बू झींगुर गाता रहता है, "दुनिया में रहना है तो काम करो प्यारे।"

अपने रचनाकार को जानिए

स्नेहा सिंह : जन्म : जुलाई, 2000, रायबरेली के एक गांव में। दिल्ली यूनिवर्सिटी से पढ़ाई करने के साथ लेखन। बच्चों की कहाऑइयों के साथ साथ सामाजिक लेख लिखने में रुचि।

अपना योगदान दें

पायस बच्चों को ध्यान में रखकर पायस का प्रकाशन रंगीन चित्रों के साथ आप सबके सहयोग से हो पा रहा है।

रचना ही नहीं, आर्थिक योगदान देकर भी इस प्रयास में सहयोगी बनें

मजेदार खबरें पूरी दुनिया से

अमेरिका में वैज्ञानिकों ने बनाईं ना पिघलने वाली 'जेली आइस क्यूब्स'

यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफॉर्निया, डेविस के शोधकर्ताओं ने प्लास्टिक मुक्त 'जेली आइस क्यूब्स' विकसित की हैं जो ना पिघलने के साथ-साथ ऐंटी-माइक्रोबियल हैं और क्रॉस-कंटेमिनेशन को रोकती हैं। इन जेली में 90% से अधिक पानी और अन्य अवयव हैं जो संरचना को स्थिर रखते हैं। ये क्यूब्स तापमान के आधार पर रंग बदलती हैं और छूने में जिलेटिन डिज़र्ट जैसी हैं।

वीडियो ABP पर / कुछ घंटे पहले

आईएफएस अधिकारी ने शेयर कीं 105 साल के अंतराल में खींची गई आर्कटिक क्षेत्र की तस्वीरें

आईएफएस अधिकारी प्रवीण कासवान ने 105 साल के अंतराल पर खींची गईं आर्कटिक क्षेत्र की तस्वीरें शेयर कीं और लिखा, "दोनों तस्वीरें गर्मी में ली गई थीं...क्या आपको कुछ खास नज़र आया?" ये तस्वीरें फोटोग्राफर क्रिश्चियन एसलैंड और ग्रीनपीस द्वारा बनाई गई 2003 की सीरीज़ का एक हिस्सा हैं। एक यूज़र ने लिखा, "कुछ प्रजातियों का प्राकृतिक आवास चला गया।"

और पढ़ें Twitter पर / 1 दिन पहले

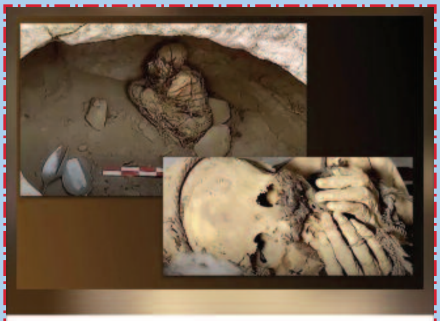

रस्सियों से बंधी 800 साल पुरानी ममी पेरू में ज़मीन में दबी मिली

पुरातत्वविदों को दक्षिण अमेरिकी देश पेरू में एक भूमिगत मकबरे में कम-से-कम 800 साल पुरानी एक ममी दफन मिली है। एक पुरातत्वविद ने कहा, "इस ममी की मुख्य विशेषता यह है कि इसका पूरा शरीर रस्सियों से बंधा हुआ है और चेहरा हाथों से ढका हुआ है।" हालांकि, ममी के जेंडर की पहचान नहीं हो पाई है।

और पढ़ें Reuters पर / कुछ घंटे पहले

सर्वे में 14 राज्यों व यूटी की 30% महिलाओं ने पुरुषों द्वारा पत्नियों की पिटाई को ठहराया जायज़

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण ने खुलासा किया है कि 14 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 30% से अधिक महिलाओं ने कुछ परिस्थितियों में पति द्वारा पत्नी की पिटाई को जायज़ ठहराया है। तेलंगाना और आंध्र प्रदेश की 84% महिलाओं ने पुरुषों द्वारा पत्नियों की पिटाई को उचित ठहराया जबकि हिमाचल प्रदेश में सबसे कम 14.8% महिलाएं इससे सहमत थीं।

टेस्ट डेब्यू पर पहली पारी में शतक और दूसरी पारी में 50+ बनाने वाले पहले भारतीय बने श्रेयस

कानपुर टेस्ट में न्यूज़ीलैंड के खिलाफ डेब्यू पर पहली पारी में शतक बनाने वाले श्रेयस अय्यर दूसरी पारी में 65-रन बनाकर आउट हुए। इसके साथ ही श्रेयस टेस्ट डेब्यू पर पहली पारी में शतक और दूसरी पारी में 50+ स्कोर बनाने वाले पहले भारतीय क्रिकेटर और ओवरऑल 10वें खिलाड़ी बन गए हैं। श्रेयस ने पहली पारी में 105-रन बनाए थे।

और पढ़ें BCCI पर / कुछ घंटे पहले

यूएन ने नेपाल व बांग्लादेश को विकासशील देशों में शामिल करने का प्रस्ताव किया स्वीकार

संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) ने नेपाल, बांग्लादेश व लाओस को न्यूनतम विकसित देश (एलडीसी) की श्रेणी से विकासशील देशों की सूची में शामिल करने संबंधी एक प्रस्ताव को स्वीकार किया है। एलडीसी श्रेणी में इस समय 46 देश हैं। यूएन के मुताबिक, विकासशील देश की श्रेणी में आने के लिए किसी देश की प्रति व्यक्ति आय $1,230 होनी चाहिए।

और पढ़ें अमर उजाला पर / कुछ घंटे पहले

दुर्लभ मौसमी घटना में कनाडा की झील में दिखे बर्फ के हज़ारों गोले, वायरल हुईं तस्वीरें

कनाडा की मैनीटोबा झील में बने बर्फ के हज़ारों गोलों की परत की तस्वीरें-वीडियो ऑनलाइन सामने आए हैं। वायरल तस्वीरों में दिखा आइस फॉर्मेशन एक दुर्लभ घटना है जो मौसम के अनुकूल होने पर होती है। ऐसा तब होता है जब शून्य से कम तापमान वाले पानी की तेज़ धाराओं में नरम बर्फ या बर्फ के क्रिस्टल फॉर्म होते हैं।

और पढ़ें Twitter पर / कुछ घंटे पहले

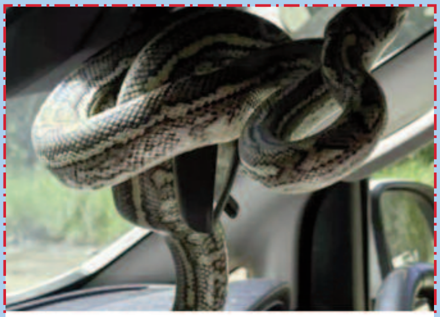

खिड़की खुली छोड़ने पर ऑस्ट्रेलिया में परिवार को कार के रियर व्यू मिरर से लिपटा दिखा अजगर

सांप पकड़ने वाले ऑस्ट्रेलियाई शख्स ने कार के रियर व्यू मिरर से लिपटे अजगर की तस्वीरें शेयर कर लिखा है, "एक परिवार ने पिकनिक के दौरान कार को ठंडा रखने के लिए खिड़की को खुला छोड़ दिया!" उन्होंने लिखा, "सिर्फ ऑस्ट्रेलिया में ही आप अपनी कार में लौटने पर कोस्टल कारपेट पाइथन को शीशे के चारों ओर लिपटे देखेंगे।"

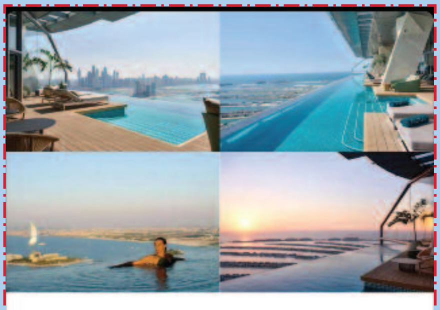

हवा में 200 मीटर ऊंचाई पर लटका हुआ दुनिया का सबसे ऊंचा 360° इन्फिनिटी पूल दुबई में खुला

हवा में 200-मीटर ऊंचाई पर लटका हुआ दुनिया का सबसे ऊंचा 360° इन्फिनिटी पूल दुबई में खुल गया है। आवासीय बिल्डिंग व होटल पाम टॉवर की 50वीं मंज़िल पर स्थित 'औरा स्काईपूल' में 750 वर्गमीटर का पूल डेक है। मॉर्निंग विज़िट के लिए शुरुआती प्रवेश शुल्क ₹3,450 है और पूरे दिन के वीआईपी 'आईलैंड' अनुभव के लिए ₹12,190 तक लगेंगे।

और पढ़ें Twitter पर / 1 दिन पहले

भारतीय खगोलविदों ने सूर्य से भी गर्म 8 दुर्लभ तारों का पता लगाया

पुणे स्थित नैशनल सेंटर फॉर रेडियो एस्ट्रोफिज़िक्स (एनसीआरए) के खगोलविदों ने बताया है कि उन्होंने हाल ही में 8 रेडियो तारों की खोज की है जो सूर्य से भी गर्म हैं। एनसीआरए के अनुसार, ये तारे एक दुर्लभ श्रेणी 'एमआरपीज़' (मेन सिक्वेंस रेडियो पल्स एमिटर्स) से संबंधित हैं और इनका पता जाइंट मीटरवेव रेडियो टेलीस्कोप (जीएमआरटी) से चला।

गहरे समुद्र में पाई जाने वाली दुर्लभ फुटबॉलफिश अमेरिका के बीच पर बहकर आई, तस्वीर वायरल

गहरे समुद्र में पाई जाने वाली एक दुर्लभ फुटबॉलफिश अमेरिका के एक बीच पर बहकर आ गई जिसकी तस्वीर वायरल हुई है। इस मछली को देखकर एक शख्स ने कहा, "मैंने कभी ऐसा जीव नहीं देखा जो इतना डरावना दिखता हो।" एक इक्थियोलॉजिस्ट (मछलियों की प्रजातियों के बारे में जानने वाला) ने कहा, "ये विज्ञान के लिए....बहुत दुर्लभ...व मूल्यवान हैं।"

ग्रेटर नोएडा में बन रहे एशिया के सबसे बड़े इंटरनैशनल एयरपोर्ट की क्या होंगी विशेषताएं?

ग्रेटर नोएडा में बन रहा एशिया का सबसे बड़ा एयरपोर्ट नोएडा इंटरनैशनल एयरपोर्ट देश में शुद्ध रूप से शून्य कार्बन उत्सर्जन वाला पहला एयरपोर्ट होगा। एयरपोर्ट में मल्टीमॉडल ट्रांज़िट हब होगा जिसमें मेट्रो, हाई-स्पीड रेल स्टेशन, टैक्सी, बस सेवाएं और प्राइवेट पार्किंग होगी। 1,300 हेक्टेयर में एयरपोर्ट का पहला चरण 2024 तक तैयार होगा जिस पर ₹10,050 करोड़ खर्च होंगे।

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए रेलवे द्वारा शुरू की गई 'भारत गौरव ट्रेन' सेवा क्या है?

रेलवे ने 'भारत गौरव' नामक थीम आधारित टूरिस्ट सर्किट ट्रेन चलाने का ऐलान किया है जिसे निजी कंपनी भी संचालित कर सकेंगी। सेवा प्रदाता पर्यटकों को रेल यात्रा, रहना, दर्शनीय स्थलों का भ्रमण, ऐतिहासिक/विरासत स्थलों का भ्रमण, टूर गाइड सहित सभी सेवाओं के समावेशी पैकेज देंगे। वे थीम के मुताबिक कोच के इंटीरियर को डिज़ाइन करने के लिए स्वतंत्र होंगे।

जर्मनी में वैक्सीन न लगवाने वालों पर सार्वजनिक गतिविधियों में हिस्सा लेने पर लगेगा बैन

जर्मन चांसलर एंजेला मर्केल ने कहा कि जर्मनी में जिन लोगों का कोविड-19 टीकाकरण नहीं हुआ, उनके गैर-ज़रूरी सामान की दुकानों और सांस्कृतिक-मनोरंजक कार्यक्रमों में जाने पर बैन रहेगा। बकौल मर्केल, 24 घंटों में 70,000 नए केस आने के बाद ऐसा करना ज़रूरी है। स्थानीय मीडिया के अनुसार, हाल ही में संक्रमण से उबरे लोगों पर यह बैन नहीं होगा।

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण में पहली बार महिलाओं की संख्या पुरुषों से अधिक दर्ज हुई

2019-21 में हुए राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (एनएफएचएस) के मुताबिक, भारत में प्रति 1000 पुरुषों पर 1020 महिलाएं हैं। एनएफएचएस की 1992 में शुरुआत होने के बाद महिलाओं का पुरुषों से अनुपात पहली बार बढ़ा है। भारत के शहरी इलाकों में 1,000 पुरुषों पर 985 महिलाएं जबकि ग्रामीण इलाकों में यह अनुपात 1000 पुरुषों पर 1,037 (महिलाएं) है।

इतिहास में सबसे ज़्यादा देखा जाने वाला टी20I मैच बना टी20 विश्व कप का भारत-पाक मैच

टी20 विश्व कप-2021 में हुआ भारत-पाकिस्तान मैच इतिहास में सबसे ज़्यादा देखा जाने वाला टी20I मैच बन गया है। बकौल आईसीसी, इस मैच ने भारत में खेले गए भारत-वेस्टइंडीज़ के टी20 विश्व कप 2016 सेमीफाइनल मैच को पछाड़ा। भारत-पाक मैच की रिकॉर्ड टेलीविज़न रीच 16.7 करोड़ रही जबकि भारत में स्टार इंडिया नेटवर्क पर 15.9 अरब मिनट की खपत हुई।

मछुआरे को रूस में मिला 'चीज़बर्गर' जैसा दिखने वाला समुद्री जीव

एक रूसी मछुआरे ने इंस्टाग्राम पर 'चीज़बर्गर' जैसे दिखने वाले एक समुद्री जीव की तस्वीरें शेयर की हैं। इसके साथ मछुआरे ने लिखा है, "क्या यह दांतों वाला समुद्री चीज़बर्गर है? या...किसी फास्ट फूड रेस्टोरेंट का नया चिकन सैंडविच?" तस्वीर पर प्रतिक्रिया देते हुए एक इंस्टाग्राम यूज़र ने लिखा, "वाह! समुद्र में हैरतअंगेज़ चीज़ें मिलती हैं!"

लोगों को किम जोंग का लुक कॉपी करने से रोकने के लिए उ. कोरिया में लेदर कोट पर लगा बैन: खबर

रिपोर्ट्स के मुताबिक, उत्तर कोरिया ने यह कहकर लेदर ट्रेंच कोट पर प्रतिबंध लगाया है कि किम जोंग-उन के फैशन विकल्पों की नकल करना अपमानजनक है। 2019 में टीवी पर किम के लेदर कोट पहने नज़र आने के बाद परिधान निर्माताओं ने लेदर कोट बनाने शुरू किए थे। वहीं, निर्माताओं व पहनने वालों से लेदर कोट ज़ब्त किए गए हैं।

सांता की सवारी रेंडियर

रेंडियर हिरन का ही एक प्रजाति है आमतौर पर पृथ्वी से सुदूर-उत्तर के बर्फीले आर्कटिक और उत्तरी यूरोप के पहाड़ों के साथ साइबेरिया और नॉर्थ अमेरिका में भी दिखते हैं। इनकी आबादी फिलहाल ठीक है पर जिस तरह से इनका शिकार हो रहा है, इस जानवर के विलुप्त होने का संकट मंडरा रहा है। इसकी कई प्रजातियां हमेशा के लिए खत्म हो भी चुकी हैं।

रेंडियर अपने सिंगों के कारण काफी आकर्षक दिखते हैं। शायद इसीलिए कल्पना में इसे सांता की बग्घी खींचने के लिए चुना गया होगा। सांता को बर्फ साथ दिखाया जाता है और बर्फीले इलाकों में रेंडियर से अच्छी साथी सांता को भला कैसे मिलता?

रेंडियर के रंग और अकार स्थान के अनुसार अलग-अलग होते हैं। इसी तरह इनके नाम भी स्थान के अनुसार बदले हुए हैं। यूरोपीय क्षेत्रों में जहां रेंडियर नाम प्रचलित है वहीं उत्तरी अमेरिका में इन्हें कॅरिबो के नाम से पुकारा जाता है।

कमाल की बात यह है कि नर रेंडियर से आकार में मादा रेंडियर छोटी होती है, परंतु वजन में मादा ज्यादा भारी होती है। उम्र भी मादा रेंडियर की ज्यादा होती है। नर करीब 17 साल तो मादा करीब 21 साल की उम्र पाते हैं। नर और मादा दोनों के सींग होते हैं, हालांकि नर के सींग बड़े होते हैं। रेंडियर की कुछ प्रजातियां ऐसी भी हैं जिनमें मादाओं के सींग ही नहीं होते। आमतौर पर मादा किसी शांत निर्जन इलाके में बच्चे को जन्म देती है। पैदा हुए बच्चे रेंडियर का औसत वजन 6 किलो तक होता है। पैदा होने के 45 दिन बाद बच्चा चरने और चारा खाना लायक हो जाता है।

रेंडियर आमतौर पर शाकाहारी होते हैं। इनका मुख्य चारा घास और पत्ते हैं। इनके पेट में चार थैलियां होती हैं। ये कुछ ही उन जानवरों में से एक है जो शैवाल को खाते और पचा लेते हैं। भूख की मजबूरी में इन्हें चूहों और चिड़ियों के अंडों पर हाथ साफ करते भी देखा गया है।

मौसम का रेंडियर पर गहरा असर होता है। बर्फ पड़ने के दिनों में इन्हें खाने के लाले पड़ जाते हैं। उत्तरी

अमेरिका में तो रेंडियर सर्दियों में गरम स्थानों के लिए पलायन करते हैं। वे अपना प्रवास बदलने के लिए पांच हजार किलोमीटर तक की यात्रा कर लेते है। प्रवासी जानवर के रूप में इनके झुंड में पचास हजार से पांच लाख तक रेनडियर होते हैं, जो कि प्रवास स्थान बदलने के हिसाब से विश्वरिकॉर्ड है।

रेंडियर के दुश्मन भी बहुत हैं। गोल्डन ईगल और पहाड़ी भेड़िए इनके बच्चों का जब तब शिकार करते रहते हैं। जबकि ध्रुवीय भालू यानी पोलर बीयर और ब्राउन बीयर भी इनका शिकार करते रहते हैं। पहाड़ों पर रहनी वाली बहुत-सी जातियों के लिए रेंडियर एक बहुत ही महत्वपूर्ण पशु है। वे इनका शिकार भी करते हैं और कुछ जातियों ने तो इन्हें पालकर अपने जीवन का हिस्सा बनाया हुआ है। वे इनका दूध पीते हैं, इनका मांस खाते हैं, इनकी खाल के कपड़े-जूते पहनते हैं और सांताक्लाज की तरह अपनी स्लेजों को खींचने के लिए इस्तेमाल करते हैं।

आज रेंडियर को संरक्षण की जरूरत है। एक अध्ययन के अनुसार सांता के मददगार रेंडियर का अस्तित्व जलवायु में परिवर्तन, उनके बढ़ते शिकार की वजह से खतरे में है। पिछले 25 साल में करीब पचीस लाख रेंडियर खत्म हो चुके हैं।

भविष्य के सितारे

तुम बच्चों के लिए विशेष रूप से कुछ पेज हमने सुरक्षित किए हैं। तुम जिस रूप में चाहो, अपनी भावनाएं व्यक्त कर सकते हो। उन्हें संजोकर हम यहां देंगे।

आखिर तुम सब में से ही भविष्य के कलाकार, इस दुनिया के सामने आकर भारत का नाम रोशन करेंगे। कभी चित्रकार, तो कभी कहानीकार तो कभी कवि या विचारक बनकर। तो फटाफट रचनाएं भेजो-

email : payasmagazine@gmail.com
whatsapp : 7982014609

बाल कोना में छपने वाले बच्चों में से तीन बच्चों को प्रथम (तीन सौ), द्वितीय (दो सौ) और तृतीय पुरस्कार (एक सौ रुपए) देने का निर्णय लिया है, दीप्ति मित्तल ने

माधुरी, कक्षा : 4, प्राथमिक विद्यालय धुसाह1, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

✍ माधुरी साहू

निशा साहू, प्राथमिक विद्यालय, धुसाह1, बलरामपुर, , उत्तर प्रदेश

द्युति, कक्षा : 2, प्राथमिक विद्यालय धुसाह1, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

नाम : माधुरी साहू
आयु : 10 वर्ष
कक्षा :5, स्कूल : प्राथमिक विद्यालय धुसाह1, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

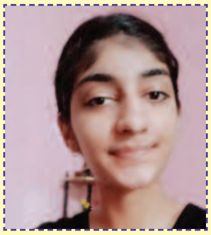

नाम : आंचल
उम्र :13
कक्षा : 8,
अलमाईटी पब्लिक स्कूल
हमीरपुर, हिमाचल प्रदेश

आंचल

हुमैरा मिर्ज़ा,
कक्षा : 4,
प्राथमिक विद्यालय धुसाह 1,
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

नाम : अराध्य वैश्य

उम्र : 8

कक्षा : 3

जिंगल बेल स्कूल,
अयोध्या, उत्तर प्रदेश

नाम : वेदांश वैश्य

उम्र : 4

कक्षा : एल के जी

जिंगल बेल स्कूल,
अयोध्या, उत्तर प्रदेश

मानवी शर्मा

सर्दी से मुलाकात

बर्फ तो नहीं गिरती यहाँ,
लेकिन ठण्ड बर्फीली होती है;
ओस भरे मौसम में,
नाक काबू खो लेती है।

गर्म पकौड़े की महक दूर से ही आती है,
मम्मी कम्बल उठाए जब हमें उठाती है,
पकौड़े की प्लेट रखके बोलती है, खा ले!
तब कोहरे भरी ठण्ड में सूरज से मुलाकात
हो जाती है।

सुकून से दर्शन हो जाते हैं,
जब गर्म पानी से सुबह-सुबह नहाते हैं,
बैड के अंदर से गर्म कपड़े निकल जाते हैं,
जब दिसम्बर की ठण्ड की छींटे शरीर पर पड़ जाते हैं।

नाम : प्रकाश चंद
उम्र :14, कक्षा : 10,
नानक मत्ता पब्लिक स्कूल, उधमसिंह नगर, उत्तराखंड

पैरों का जादूगर

फुटबॉल की टीम में वैसे तो खेलते ग्यारह खिलाड़ी हैं, पर इनमें से एकाध ऐसे होते हैं, जो अपनी उपस्थिति से मैच का नक्शा बदल देते हैं। अर्जेंटीना का करिश्माई खिलाड़ी लियोनेल मेस्सी ऐसे ही खिलाड़ियों में से एक है। अर्जेंटीना के महानतम खिलाड़ी मेराडोना ने भी उसे अपना उत्तराधिकारी घोषित कर किया था।

मेस्सी का जन्म 24 जून 1987 को अर्जेंटीना के नगर रोसारियो में हुआ। उसके पिता जॉर्ज होरासियो मेस्सी एक फैक्टरी में काम करते थे। मेस्सी के पूर्वजों का संबंध इटली से था। मेस्सी की मां का नाम है सेलिया मारिया और उसके दो भाई और एक बहन भी है।

मेस्सी का बचपन बहुत गरीबी में गुजरा। पांच वर्ष की आयु में ही उसने फुटबॉल खेलना शुरू कर दिया था। उसका पहला क्लब था ग्रेंडोली और उसके प्रथम गुरु थे उसके अपने पिता। 1995 में आठ वर्ष की आयु में मेस्सी रोसारियो के एक क्लब 'नेवेल्स ओल्ड बॉयज' से जुड़ गया।

11 वर्ष की आयु में मेस्सी ग्रोथ हार्मोन डेफिसिएंसी नामक बीमारी से पीड़ित हो गया। इलाज के लिए प्रति माह पैंतालीस हजार रुपयों की जरूरत थी, जिसे बर्दाश्त करना उसके गरीब परिवार के लिए संभव नहीं था। इतना पैसा देने के लिए कोई क्लब तैयार भी न था।

ऐसे समय में स्पेन के विश्व प्रसिद्ध क्लब बार्सिलोना के खेल डायरेक्टर चार्ल्स आगे आए। उन्होंने मेस्सी का खेल देखा था और इस किशोर से वह प्रभावित थे। उन्होंने मेस्सी को स्पेन बुलाया और बार्सिलोना का कांट्रेक्ट दिया। उन्होंने उसके इलाज की भी जिम्मेदारी ली। जल्दी ही वह बार्सिलोना की टीम का महत्त्वपूर्ण खिलाड़ी बन गए और उसे अपने साथ जोड़े रखने के लिए क्लब ने 14 महीने में दो बार उसके साथ अपने कांट्रेक्ट का नवीनीकरण कर उसका मेहनताना बढ़ाया। तब से मेस्सी केवल बार्सिलोना के लिए ही खेले। इस साल कुछ नियमों के कारण उन्हें यह क्लब छोड़ना पड़ा,।

मेस्सी इतनी तेजी से फुटबॉल की दुनिया में छाए कि उन्हें17 वर्ष की आयु में ही अर्जेंटीना की टीम से जोड़ दिया गया। 2006 के विश्व कप में भी उसने भाग लिया। हालांकि वहां अर्जेंटीना का निराशाजनक प्रदर्शन रहा और मेस्सी को केवल एक बार मैदान में उतरने का मौका मिला। पहले मैच में ही मेस्सी ने देश के लिए गोल किया था। तब से मेस्सी हर बार विश्वकप में भाग लेते आए हैं पर एक बार फाइनल में पहुंचने के बावजूद विश्व चैंपियन बनने का उनका सपना अधूरा है।

मेस्सी को फीफा द्वारा सन 2009 का सर्वश्रेष्ठ फुटबॉल खिलाड़ी घोषित किया गया। यूरोपियन गोल्डन शू अवार्ड 6 बार जीतने वाले मेस्सी अकेले खिलाड़ी हैं। मैस्सी ने क्लब स्तर पर बहुत ट्रॉफी जीत पाए, पर उनका सपना था कि वह अर्जेंजीना के लिए कोई ट्रॉफी जीते। आखिर इस साल उन्होंने कोपा अमेरिका कप जीतकर अपने सपने को पूरा किया।

सांताक्लॉज
कथा एवं चित्रांकन :
पंकज राय
क्रिसमस पर मुन्ना सांताक्लॉज बन अपने दोस्त कैटी के साथ मिलकर गिफ्ट बांट रहा था।
बोलो, तुम्हें क्या चाहिए ? आज सांता तुम्हारी हर इच्छा पूरी करेगा।
सांता नहीं, नकली सांताक्लॉज। नकली दाढ़ी वाला।
अगर तुम असली हो, तो मुझे आईफोन दे दो।
अरे क्रिसमस ट्री ले लो भाई। महंगी चीज सेंटा कहां से लाएगा।
इससे पहले कोई कुछ कहता, नन्हा सांता ने एक चमचमाता आईफोन डॉगी की ओर बढ़ाया।
तू तो बड़ा लकी निकला रे।
अरे यह तो नकली आईफोन है, खिलौना है।
कमाल है। एक तो मुझे नकली सांता कहते हो और साथ ही असली गिफ्ट की उम्मीद करते हो।
हा-हा। मैरी क्रिसमस

ऑनलाइन डिजिटल मासिक बाल पत्रिका

पायस

◆ जो बच्चे अपनी कल्पना के पंख फैलाकर जैसे भी उड़ना चाहेंगे, हम उन्हें पायस में आकाश उपलब्ध करवाएंगे। रचनाकारों के साथ-साथ बच्चों की लिखी कहानी, कविता के साथ अन्य सभी विधाओं को यहां स्थान मिलेगा। आपसे आग्रह है कि अपने आसपास के बच्चों को इसका लाभ उठाने के लिए प्रेरित करें। इसकी पीडीएफ कापी अपने लोगों में शेयर करें।

◆ यह पत्रिका निशुल्क है। पर जो किसी भी रूप में सहायता करना चाहें, पत्रिका को चलाने के लिए आर्थिक सहयोग प्रदान करना चाहें, उनका स्वागत है।

◆ **रचनाकारों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। अभी यह एकल प्रयास है, अतः टाइप करवाना संभव नही है।

◆ **बाल पाठकों से :** प्रकाशन हेतु भेजी जाने वाली रचना अवश्य टाइप की हुई हो। हस्तलिखित अथवा स्कैन करके भेजी गई सामग्री स्वीकार नहीं कर पाएंगे। रचना पीडीएफ में न भेजकर, वर्ड फाइल में भेजें। जो भी चित्र भेजें, उसे बढ़िया से स्कैन करके भेजें। अगर चित्र साफ नहीं होंगे, तो उनका उपयोग नहीं हो पाएगा। हर रचना या पेंटिंग के साथ अपना क्लोजअप फोटो, उम्र, कक्षा, स्कूल का नाम व मोबाइल नंबर लिखकर भेजना न भूलें।

बातचीत व जानकारी के लिए : whatsapp no : 7982014609
रचना भेजने के लिए : email : **payasmagazine@gmail.com**

◆ आपका सहयोग किसी भी रूप में हो सकता है। बाल पत्रिका को संबल प्रदान करने के लिए आप सादर आमंत्रित हैं--

✦ संरक्षक बनकर ✦ मासिक अनुदान देकर ✦ यथासंभव एकमुश्त सहायता देकर ✦ विज्ञापन देकर ✦ हर महीने छपने वाले लेखकों या चित्रकारों के भुगतान की जिम्मेदारी उठाकर ✦ किसी और रूप में, जो आपको उचित लगे।

◆ अनुदान के लिए प्रयोग करें--

ONLINE TRANSFER / UPI

STATE BANK OF INDIA
Anil Kumar Jaiswal
S/A no- 20155811729
Ifsc code SBIN0005943
Mobile number associated with account 9810556533

PAYTM : 7982014609
PHONEPE : 9810556533
GOOGLE PAY : 9810556533
ANIL JAISWAL

अनिल जायसवाल
9810556533, 7982014609
email : **payasmagazine@gmail.com**